

“स्मृति दिवस पर कोई न कोई विशेषता स्वयं में धारण कर कमियों को समाप्त करना, भारत में भारत का पिता गुप्तवेष में आ गया है, इस आवाज को चारों ओर स्पष्ट फैलाना”

सभी चैतन्य दीपकों को मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। हर एक चैतन्य दीपक अपनी-अपनी चमक से विश्व को चमका रहे हैं। एक-एक चैतन्य दीपक कितना अच्छे ते अच्छा चमक रहा है। यह देखकर बापदादा एक-एक दीपक को देखकर खुश हो रहे हैं। वाह दीपकों वाह! सच्ची दीवाली अगर देखनी हो तो इन चैतन्य दीपकों के बीच में देख सकते हैं। बापदादा भी एक-एक दीपक को देख खुश हो रहे हैं। वाह! एक-एक दीपक वाह! क्योंकि आप एक-एक दीपक बाप के अति लाडले हो। इतनी बड़ी विश्व में से आप सिकीलधे दीपको को बाप देख खुश हो रहे हैं और दिल में गीत गा रहे हैं, हर एक दीपक परमात्म प्यारे और दिल में समाने वाले हैं। सच्ची दीपमाला तो बाप सम्मुख देख रहे हैं और एक-एक दीपक के लिए वाह वाह के गीत दिल में गा रहे हैं। हर एक दीपक की अपनी-अपनी विशेषता बाप भी देख रहे हैं और आप सभी तो देखते ही रहते हैं। आप दीपकों द्वारा विश्व चमक रहा है और हर एक दीपक अपनी रोशनी से विश्व को रोशन बना रहे हैं। बापदादा रिजल्ट को देख खुश है कि हर एक दीपक अपनी रोशनी से चारों ओर चमकाना, यह कार्य बहुत अच्छा दिल से कर रहे हैं।

अभी इस दिव्य रोशनी को देख दुनिया वालों की भी नज़र में आ रहा है कि विश्व में यह अलौकिक रोशनी कहाँ से आई है! सबकी नज़र आप सबकी तरफ जा रही है।

आज स्मृति दिवस पर बापदादा आप स्मृति के दीपकों को देखकर हर्षित हो रहे हैं। कितना एक-एक दीपक अपनी झलक दिखा रहे हैं, जिससे विश्व परिवर्तन हो रहा है। अंधकार बदल रोशनी में आ रहा है और अभी दिल में सभी आत्माओं को यह संकल्प है कि कहाँ से रोशनी आ रही है! धीरे-धीरे इस रोशनी को देख वा आप दीपकों को देख खुश भी बहुत हो रहे हैं। यह रोशनी चारों ओर फैलनी ही है। अच्छा।

दिल्ली - आगरा ज़ोन की सेवा का टर्न है:- ऐसे हाथ उठाओ। भले पधारे। देहली वालों को बापदादा एक-एक को विशेष यादप्यार दे रहे हैं। देहली वालों को देहली को परिस्तान बनाए अपना राज्य दिल्ली में स्थापन करना है। सेवा कर रहे हैं, अभी और ज़ोर से आवाज हो कि देहली अभी परिस्तान बनना है। सबको पता पड़े, सेवा अच्छी कर रहे हो लेकिन अभी सभी तक आवाज नहीं गया है। कोने-कोने में यह तो पता पड़ना चाहिए कि हमारे सतयुगी राज्य अधिकारी गुप्तवेष में आ गये हैं। अभी सेवा द्वारा यह तो परिवर्तन आया है कि ब्रह्माकुमारियां जो बताती हैं वह अच्छा बताती हैं, अभी यह आवाज हो कि सत्य बताती हैं। वह भी दिन आ जायेगा क्योंकि अभी आवाज पहुंचा है लेकिन अभी आवाज में फोर्स चाहिए। सबकी नज़र परिवर्तन हो रही है, यह समझते हैं लेकिन करने वाले कौन, वह अभी पूरा प्रत्यक्ष नहीं हुआ है। धार्मिक लोग समझते हैं कि कुछ होने वाला है लेकिन अभी यह आवाज प्रसिद्ध हो कि परमात्मा द्वारा यह नई दिल्ली बनाने वाले आ गये हैं। यह अभी स्पष्ट रीति से आना चाहिए। आप लोग सेवा कर रहे हो, सेवा अच्छी कर रहे हो। पहले जो सुनने नहीं चाहते थे, अभी सुनने चाहते हैं लेकिन सुनने वाले क्या बनने वाले हैं, हो रहा है। बापदादा बच्चों की सेवा पर खुश है, कर रहे हो लेकिन आवाज अभी बुलन्द नहीं है, चारों ओर नहीं फैलता। फैल रहा है लेकिन ऐसी रफ्तार से फैले जो सबके मुख से निकले विश्व पिता आ गये, विश्व पिता के बच्चे गुप्तवेष में अपना कार्य कर रहे हैं। अभी थोड़ा थोड़ा आवाज फैल रहा है लेकिन अभी थोड़ा ज़ोर से फैलना चाहिए। शुरू हुआ है लेकिन कोने कोनों में अब चारों ओर आवाज करने वाले स्पष्ट बोलें कि परिवर्तन होना ही है, हो रहा है।

कलकत्ता का गुप आया है, पूरा फूलों का श्रृंगार किया है:- कलकत्ता वाले सभी भाई बहिनों को चाहे यहाँ आये हैं, चाहे वहाँ हैं लेकिन यह आवाज कलकत्ता से चारों ओर फैला है कि कुछ हो रहा है लेकिन सोच रहे हैं, अन्दर-अन्दर समझ रहे हैं कुछ परिवर्तन दिखाई तो देता है लेकिन अभी ज़ोर से धूम मचाके बोले परिवर्तन करने वाले हमारे साथी अब अपना कर्तव्य कर रहे हैं और आगे चलके यही कर्तव्य स्पष्ट हो जायेगा। लेकिन समझते हैं कुछ परिवर्तन हो रहा है। अभी पहले जैसे वह नहीं है कि होना मुश्किल है, कैसे होगा, क्या होगा, यह क्वेश्चन नहीं है। अभी समझते हैं हो रहा है लेकिन कहाँ कैसे कभी-कभी समझ में भी आता है लेकिन अभी स्पष्ट बुद्धि में यह नहीं आया है कि यहाँ आबू तरफ इशारा करे, आबू में यह कार्य हो रहा है, यह आवाज से स्पष्ट नहीं कर सकते लेकिन अभी पहले जो समझते थे तो यह कर्तव्य ब्रह्माकुमारियां कहती हैं लेकिन हो गुप्त रहा है, अभी समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियां कुछ परिवर्तन करने का कार्य कर रही हैं लेकिन अभी स्पष्ट नहीं है। यही समझे ब्रह्माकुमारियां ही निमित्त हैं, कोई-कोई समझने लगे हैं लेकिन प्रत्यक्ष रूप में नहीं है वह भी समय आ जायेगा। अभी आप लोगों का जो परिवर्तन हो रहा है, उसका प्रभाव पड़ रहा है और पड़ते

पड़ते आखिर स्पष्ट हो जायेगा।

दादी जानकी से:- (मेरा बाबा) मेरी बच्ची। बहुत अच्छा चला रही हो, चलता रहेगा। आपको निमित्त बनने की बहुत-बहुत मुबारक हो।

डबल विदेशी-400 आये हैं:- अच्छा है, बधाई हो। आप सब निमित्त बने हैं बाप के कर्तव्य को प्रसिद्ध करने के लिए। तो बापदादा खुश है। कर रहे हैं, बढ़ भी रहे हैं लेकिन अभी स्पीड थोड़ी बढ़ाओ। बाकी शुरू हुआ है, समझते हैं कुछ होने वाला है, आसार सभी के पास पहुंच रहे हैं लेकिन अभी कोई निमित्त बनें कहने के लिए, वह अभी निकलेगा। गुप्त है। हो जायेगा। अभी आप लोग भी यह दृढ़ संकल्प रखो तो बाबा को प्रत्यक्ष करना ही है। है संकल्प है, लेकिन अभी दृढ़ता लाओ संकल्प में। होना ही है, होना है लेकिन इस तरफ थोड़ा अटेंशन दो। कर रहे हैं, अपने अपने तरफ से, अपना कर रहे हैं। ऐसे भी नहीं, नहीं कर रहे हैं लेकिन मिलकर यह आवाज बुलुन्द हो। जो होना है, वह हो रहा है। वह हो जायेगा।

सभी खुश है! खुश हैं सभी, हाथ उठाओ। तैयार हो? तैयार हो ना! उमंग सबमें हैं, कुछ करना है, कुछ करना है, हो भी रहा है लेकिन स्पीड बढ़ाओ।

बापदादा सभा को देख खुश भी हो रहे हैं क्योंकि सभी बच्चों के अन्दर अभी यह संकल्प है कुछ करना है, करना है, और यह संकल्प आपका कोई न कोई जलवा दिखायेगा। संकल्प अच्छा है। सभी के दिल में है ना, अब कुछ नया हो, नया हो। तो सबने खुशी-खुशी से संगठन में यह संकल्प किया है कि अभी भारत में कम से कम जो एरिया रही हुई है वहाँ अपना फर्ज निभाना है। हर एक की एरिया में जो भी मुख्य शहर है, वहाँ अभी यह प्रसिद्ध हो तो ब्रह्माकुमारियां क्या चाहती हैं। अब ब्रह्माकुमारियां जो चाहती हैं उसमें मददगार बन रहे हैं और बनना है। अभी धीरे-धीरे प्रसिद्ध हो रहा है, हो ही जायेगा इसलिए उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते चलो। आप एक-एक निमित्त हो, ऐसे नहीं जो बड़े करते हैं, हम भी करते हैं। करते हैं उसके लिए पास हो, उसके लिए मुबारक हो। परन्तु अभी आवाज थोड़ा बुलुन्द हो। भारत में भारत का पिता गुप्तवेष में आ गये हैं, यह आवाज थोड़ा स्पष्ट फैलाओ। दुख तो बढ़ रहा है। सब तंग तो हैं लेकिन कहाँ-कहाँ अल्पकाल का सुख उन्हीं को सुला देता है। तो अब सेवा में भी चेक करो किस-किस तरफ किस-किस एरिया में करना है, वह हर एक सेन्टर अपने-अपने एरिया को चेक करे और वहाँ सर्विस का आवाज फैलाये। कहाँ-कहाँ अच्छे हैं लेकिन सारे भारत को जगाना है तो अभी चेक करो और चांस लो। चारों ओर अभी आवाज फैलना चाहिए कि अभी हमें खुद भी परिवर्तन होना है और विश्व को भी परिवर्तन करने के कार्य में लगना है। तो सभी खुश है? खुश है? दो-दो हाथ उठाओ।

मोहिनी बहन से:- अभी तबियत अच्छी हो रही है, हो जायेगी इसीलिए सेवा में धीरे-धीरे पार्ट लेती जाओ। (आपके वरदान से शक्ति मिलती है) सेवा का शौक भी है वह आपको आगे बढ़ा रहा है और बढ़ाता रहेगा। (सेवा का उमंग है) हो जायेगा। आप जैसे अपने को चला रही हो ना, तो सेवा भी चल रही है, कोई ऐसी बात नहीं है।

तीनों भाइयों से:- समय की रफ्तार तो आप सब भी देख रहे हो। समय अभी स्पष्ट हो रहा है कि कार्य जो गुप्तवेष में कर रही हैं ब्रह्माकुमारियां, वह पहले समझ नहीं सकते थे क्या करती हैं यह, अभी धीरे-धीरे यह समझते हैं कि यह विश्व परिवर्तन करने के लिए उमंग-उत्साह बढ़ा रहे हैं इसीलिए अभी वायुमण्डल में भी बहुत फर्क है, भावना धीरे-धीरे बढ़ रही है। अभी सेवा की धरनी बन गई है। अभी जितना करना चाहो उतना फायदा ले सकते हो।

आज के स्मृति दिवस पर एक-एक बच्चे को इस दिन की स्मृति के साथ समर्थी चाहिए। तो सभी बच्चे इस स्मृति दिवस पर आज अपने में कोई न कोई विशेषता ध्यान में रख और अपने में धारण करें, विशेष दिन पर विशेषता धारण करें। जो भी अपने में कमी समझते हो उस कमी को आज के दिन समाप्त कर कोई न कोई उमंग उत्साह की धारणा का संकल्प करना। सोने के पहले यह संकल्प करके सोना और अमृतवेले उसी को दोहरा कर हमेशा के लिए अटेंशन देते-देते बाप समान बन जाना ही है। सभी को बहुत-बहुत यादप्यार स्वीकार हो क्योंकि सभी बहुत उमंग-उत्साह से आये हैं और सब मिल करके 18 जनवरी मना रहे हैं तो 18 जनवरी की विशेषता क्या है, उस विशेषता को अपने में धारण करके आगे बढ़ते रहना, बढ़ना ही है यह पक्का निश्चय करो कि जो भी कोई कमी है उसको आज रात तक सोच करके और संकल्प लेके सोना। अच्छा।

डबल विदेशी उठो, खड़े हो जाओ। बहुत अच्छा। सभी को बहुत बहुत बहुत बहुत यादप्यार और आगे के लिए बिल्कुल सम्पन्न, यह वरदान है।

दादी जानकी से विदाई के समय:- बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो।

“जैसे बाप और बच्चों का प्यार अमर और अलौकिक है, आपकी बाप की पहचान के साथ प्राप्तियां हुई हैं, ऐसे सेवा में आगे बढ़ते सबकी उमंग-उल्हास दिलाओ, अब किसी का भी उल्हना न रहे”

ओम् शान्ति। सभी बच्चों को चाहे सम्मुख हैं, चाहे किसी भी स्थान पर हैं लेकिन चारों ओर के बच्चों को आज के दिन की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। यह मुबारक का दिन बड़ा प्यारा है और ड्रामा में आप बच्चों के स्पेशल प्यार की निशानी बाप और बच्चों का सम्मुख साकार में मिलन हो रहा है इसलिए पहले तो जो सामने बैठे हैं उन्हीं से मिलन और मुबारक हो, मुबारक हो। यह दिन विशेष इस स्थापना के कार्य का विशेष दिन है जो बच्चों ने बाप को जाना, बाप ने बच्चों को जाना। बाप कहते मेरे बच्चे और बच्चे कहते हैं मेरे बाबा। एक-एक आगे या पीछे बैठे हुए बच्चों को बापदादा आज के दिन की सम्मुख मिलन मेले की मुबारक दे रहे हैं। हर एक के चेहरे पर आज मिलन का भाग्य, हर एक के चेहरे पर खुशनुमा रूप में दिखाई दे रहा है और बापदादा भी एक-एक बच्चे को सम्मुख मिलने के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक बच्चे के मस्तक में मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा, यह लहर मिलन की चेहरे पर दिखाई दे रही है। बाप भी एक-एक बच्चे को आगे पीछे सभी को देख कितना हर्षित हो रहे हैं। वह बाप जाने और आप जानो। बाप के दिल से एक-एक बच्चे प्रति वाह बच्चे वाह! निकल रहा है। सम्मुख मिलन हो रहा है।

बापदादा आगे पीछे कोने में भी बैठे हुए बच्चे को देख वाह बच्चे वाह का गीत गा रहे हैं। बापदादा देख रहे हैं कि हर एक बच्चा कितनी मीठी याद में बैठे हैं। कोने-कोने में आगे पीछे एक-एक बच्चा बाप को देख कितने हर्षित हो रहे हैं और बाप भी एक-एक बच्चे को देख वाह वाह बच्चे वाह के गीत गा रहे हैं क्योंकि बाप जानते हैं कि ऐसा मिलन भी सदा नहीं हो सकता। लेकिन आज यह साथ का अनुभव एक-एक बच्चे के स्नेह को देख सभी की दिल गदगद हो रही है। बाप को भी यह साकार में कभी-कभी का मिलन बहुत दिल को आकर्षित करता है। बाप भी वाह बच्चे वाह के गीत गा रहे हैं और बच्चे भी यही गीत गा रहे हैं वाह बाबा वाह! कितना इस संगमयुग का ड्रामा में पार्ट है जो बच्चे बाबा को देख रहे हैं, जान रहे हैं और बाप बच्चों को देख कितने खुश हो रहे हैं। हर एक के दिल से यही बोल निकल रहा है, मेरा बाबा प्यारा बाबा और बाप के मुख से भी यही निकल रहा है वाह बच्चे वाह! एक-एक बच्चा कैसे अपना जन्म सिद्ध अधिकार सम्मुख मिलने का अनुभव कर रहे हैं। बाप को भी बहुत-बहुत-बहुत एक-एक बच्चे का मुखड़ा देख खुशी हो रही है।

बाप भी एक-एक बच्चे को देखते क्या अनुभव करते हैं! एक-एक बच्चे का कितना दिल का प्यार है। अगर बापदादा एक-एक बच्चे के प्यार का वर्णन करता तो कई किताब लिख देते। लेकिन यह दिल जाने, बाप और बच्चे जाने। तो बाप अभी जो बच्चों के मिलन की सूरत है उससे हर एक बच्चा भले यथा शक्ति है लेकिन बच्चे और बाप का प्यार अमर और अलौकिक है। बाप खुश हो रहे हैं एक-एक बच्चे को वाह बच्चा वाह! दिल से कह रहे हैं। बाप को भी खुशी हो रही है यह थोड़े समय का सम्मुख मिलन कितना प्यारा लग रहा है। हर एक के दिल में उमंग उत्साह है कि दुनिया का हर एक बच्चा बाप को पहचान कितना अपने को आगे बढ़ा रहे हैं। तो बापदादा आज हर एक बच्चे के दिल का प्यार देख रहे हैं और उसके लिए बहुत-बहुत-बहुत दिल की दुआयें, दिल की मुबारकें एक-एक बच्चे को दे रहे हैं। वाह ड्रामा वाह! यह मिलन भी कम नहीं है। बापदादा तो दिल में ही बच्चों से मिलन मनाते रहते हैं। बिना बच्चों के रह नहीं सकते। यह मिलन की कहानियां तो बहुत हैं लेकिन अभी तो सम्मुख बच्चों को देख बहुत खुशी हो रही है। बापदादा भी दिल में बच्चों के प्यार में गीत गा रहे हैं वाह बच्चे वाह!

आज का मिलन तो है ही मिलने के दिन का। बापदादा देख रहे हैं कि एक-एक बच्चा इस प्रकार का मिलन देख कितना खुश हो रहे हैं, पहले बापदादा फिर बच्चे। एक बच्चे को भी बापदादा देखने बिना रह नहीं सकता। भले पीछे भी बैठे हैं लेकिन साकार में बच्चों को देख बापदादा भी खुश, बच्चे भी खुश।

तो अभी आगे क्या कमाल दिखायेंगे? मिलन मेला तो मनाया अब आगे क्या कमाल दिखायेंगे? हर एक के मैजारिटी के दिल में यह पहचान हो जाए, हमारा बाबा बच्चों से मिलन के बिना रह नहीं सकता। बापदादा ने देखा कि ड्रामा के पार्ट को देख बच्चे यह जरूर सोचते कि वह दिन क्या और यह दिन क्या है! लेकिन समझदार होके सेवा का पार्ट अच्छा बजा रहे हैं। बापदादा सेवा का पार्ट निभाने वाले बच्चों को देख खुश होते रहते हैं क्योंकि विश्व में आखरीन में “हमारा बाबा आ गया”, यह पहचान जरूर आयेगी। लेकिन जैसे साकार में भी विश्व में से थोड़े से बच्चों को पहचानने का अधिकार और प्राप्ति मिली, ऐसे बच्चों को इस भाग्य के कारण बाप बच्चों का मिलन होता है, यह ड्रामा का पार्ट भी दिल को सुख देता है। बाप भी खुश बच्चे भी खुश। तो बापदादा ड्रामानुसार साकार में मिलते हुए बच्चों को देख बहुत खुश होते हैं। यह मिलन भी ड्रामा का अच्छे ते अच्छा पार्ट नून्धा हुआ है। आप लोग भी खुश हो जाते हैं ना! बाप फिर भी मिलने का पार्ट देख बच्चे भी खुश और बाप भी खुश। लेकिन यह मिलन और वह मिलन कितना अन्तर है! ड्रामा का पार्ट समझ हर एक इस पार्ट से अपना शक्ति, प्यार और उमंग ले लेते हैं। बापदादा भी बच्चों से मिलकर कितना खुश होगा, वह तो बच्चे भी जानते बाप भी जानते। तो यह चांस भी ड्रामा ने अच्छा बनाया है, बापदादा एक-एक बच्चे को देख कितना खुश होते हैं और कितनी मुबारकें दिल में देते हैं।

तो यही गीत गाते वाह बच्चे वाह! सभी खुशराजी और कदम आगे बढ़ाने वाले निमित्त बने हुए हैं ना! भले फर्क है लेकिन मिलन तो होता है। बापदादा भी बच्चों को देख इतना खुश होता है, बहुत खुश होता है, एक-एक बच्चे को देख क्या करने चाहता है, वह बापदादा की दिल जाने। लेकिन बापदादा खुश है कि बच्चे चाहे नम्बरवार हों लेकिन बच्चे और बाप का मिलन तो होता है ना! बाप ने देखा कि बच्चे याद में तो रहते हैं, याद करते भी हैं लेकिन माया से सामना भी करते हैं तो बापदादा सूक्ष्म में एक-एक बच्चे को मुबारक भी देते कि वाह बच्चे वाह! यह बाप और बच्चों का मिलन अमर है और अमर रहेगा।

सभी शारीरिक और आत्मा रूप से खुश तो हो ना! हाथ हिलाओ। सभी के हाथ बापदादा देख रहे हैं। बहुत अच्छा। मुबारक हो। बापदादा ने देखा कि दिल का प्यार, सच्चा प्यार कभी मिट नहीं सकता। तो बाप भी वाह बच्चे वाह का गीत गाते रहते हैं। सभी बच्चों के याद में रहने का प्रयत्न देख बापदादा भी खुश होते हैं। इसके लिए मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। बाप भी आप बच्चों को याद करते हैं ऐसे नहीं है कि बच्चे भूल गये हैं, नहीं। एक-एक बच्चा बापदादा के दिल में है। भले नम्बरवार हैं लेकिन याद में रहते हैं। तो आज बापदादा इस दिन को महान समझते हैं जो बाप और बच्चों का सम्मुख मिलन होता है, बाप भी खुश बच्चे भी खुश। अभी आगे के लिए आवाज फैलाने का कोई नया नया प्रोग्राम बनाओ, जिससे दुनिया वाले जागे रहें, सो नहीं जायें। जगाते रहो, आगे बढ़ते रहो। बापदादा आप लोगों के भाग्य के आगे उन्हीं को बिचारे समझते हैं। लेकिन अभी ऐसा समय आने वाला है जो इन दिनों को याद करेंगे इसलिए आप अपना कार्य करते रहो। वह बिचारे हैं। आप लोग तो भाग्यवान हैं अपना भाग्य प्राप्त हुआ, उसको अनुभव कर रहे हो और बापदादा भी खुश है कि अव्यक्त होते हुए भी बच्चों ने पहचाना और सेवा का भाग्य भी ले रहे हैं। अच्छा।

सबसे अब तो इसी विधि से मिलना होता है, वह मिल रहे हैं, इसमें भी बापदादा खुश होता है। और क्या गीत गाते हैं? वाह भाग्यवान बच्चे वाह!

सेवा का टर्न इन्दौर और भोपाल का है:- (25 हजार भाई बहिनों का गुप है, 200 इन्दौर हॉस्टेल की कुमारियां आई हैं) यह भी पार्ट नून्धा हुआ है, वह चल रहा है। बापदादा भी बच्चों से मिलकर खुश होते हैं। कितने भाग्यवान बच्चे हैं, यह भाग्य देख बार-बार दिल में कहते, मुख से भी कहते वाह बच्चे, वाह भाग्यवान बच्चे वाह! अच्छा। जो पार्ट चल रहा है ड्रामानुसार चलना था, वह चल रहा है। अभी हर एक को बाप की याद में रहना है, सेवा में आगे बढ़ना है और जो भी बिचारे अनजान रह गये हैं, उन्हीं की सेवा चारों ओर बहुत खुशी-खुशी से करते रहना है। कोई उल्हना नहीं रह जाए कि आपको पता था, हमको पता नहीं पड़ा। सेवा भी करो और उन्हीं को उमंग उल्हास दे करके आगे बढ़ाओ और अपना कार्य सन्देश देने का वह खूब युक्तियुक्त करते रहो। कोई ऐसा इच्छुक कोने में रह नहीं जाए। सन्देश अभी भी चारों ओर भिन्न-भिन्न प्रकार से देते रहो। सेवा, याद दोनों का बैलेन्स रख आगे बढ़ते और औरों को भी आगे बढ़ाते रहो। बापदादा खुश है कि पीछे आने वाले भी कम नहीं हैं जो चांस मिलता है वह करते रहते हैं लेकिन अपनी अवस्थाओं का ध्यान रखना। भले थोड़े हैं लेकिन थोड़े

पावरफुल हैं। सब कुछ देख लिया है ना, तो होशियार हैं जानने में। बापदादा ऐसे बच्चों पर खुश है।

डबल विदेशी, 65 देशों से 1100 भाई बहिनें आये हैं:- अच्छा है। आते रहते और सेवा को बढ़ाते रहते, इसकी मुबारक है, मुबारक है। कोई न कोई विधि से सारे वर्ल्ड में यह फैलाते रहो। अभी भी चारों ओर आपके परिवार के छिपे हुए हैं इसलिए सेवा का पार्ट चारों ओर का चलाते रहो। उल्हना नहीं मिले आपको। आपने भी हमको नहीं जाना। फैलाते रहो, अपने परिवार की आत्माओं को अपना बनाते रहो। बापदादा आप बच्चों को देख खुश होते हैं कि बेफिक्र होके चल रहे हो, चलते रहेंगे।

पहली बार बहुत बच्चे आये हैं:- देखो, काफी लोग फर्स्ट टाइम आये हैं। तो जैसे अभी सेवा चलाते रहते हो, वैसे सेवा में आगे बढ़ते रहो। अभी बहुत ऐसे रहे हुए हैं जो रह गये हैं, चाहते हैं लेकिन पहुंच नहीं पाये हैं, सेवा अपनी बढ़ाते रहो, सन्देश देते रहो। प्रोग्राम करते रहो और जितनी सेवा बढ़ायेगे उतना आपका उल्हना खत्म हो जायेगा इसलिए सेवा आगे बढ़ाते चलो। अभी भी ऐसी बहुत आत्मायें हैं जिनको सन्देश नहीं मिला है। ऐसी आत्माओं को सेवा द्वारा जगाते रहो। जैसे आप लोग उमंग उल्हास से प्रोग्राम बनाते, सन्देश देते रहे हैं ऐसे ही और हिम्मत रख आगे से आगे बढ़ते रहो। उल्हना नहीं रह जाए कि आपने हमें चांस नहीं दिया है। सेवा का चांस बढ़ाते जाओ। इतनी बड़ी वर्ल्ड है कोई का भी उल्हना नहीं रह जाए। चारों ओर की सेवा बढ़ाते हुए आगे बढ़ते चलो। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों को बापदादा तीव्र पुरुषार्थी भव कहते हुए यादप्यार दे रहे हैं। सदा अमृतवले उठते तीव्र पुरुषार्थी भव का यादप्यार याद रख आगे बढ़ते चलना क्योंकि बाप का हर बच्चे से प्यार है। भले स्टेज पर थोड़े आते हैं लेकिन बापदादा सभी बच्चों को दूर से ही दिल का यादप्यार दे रहे हैं।

दादी जानकी जी बापदादा से मिल रही हैं, लण्डन का समाचार सुना रही हैं:- ठीक है।

न्युयार्क की मोहिनी बहन ने आपको बहुत याद भेजी है:- बहुत अच्छा शुरू से उमंग-उत्साह में रहने वाली है। सेवा का चांस लेने वाली है और सेवा कर कईयों को आगे बढ़ाने वाली है। बापदादा बच्ची को विशेष यादप्यार देते हैं। तबियत के कारण आना जाना नहीं कर सकती लेकिन बाप की याद में बच्ची भी रहती है और बाप भी याद भेजता ही रहता है। आगे बढ़ रही है और बढ़ती रहेगी।

मोहिनी बहन से:- (तबियत थोड़ी ढीली है) नहीं, तबियत का बाप को दे दो। बाप की तरफ से अभी स्टेज पर आओ। कर सकती हो, इसमें ताकत है। सभी से हाथ मिला रहे हैं।

(दादी जानकी ने कहा गुल्जार दादी को विदेश में एक बार जरूर जाना है, सभी याद कर रहे हैं) देखकरके फिर बनाना।

(पूना में जगदम्बा भवन बनाने के लिए जमीन ले ली गई है) पूणे वालों में पहले जोश जगाओ। वह थोड़े ऐसे मजे से सोये हुए हैं। जानते हैं सेवा से शौक भी है लेकिन थोड़ा जगाओ। पूना में हो सकता है।

(बृजमोहन भाई ने भी याद भेजी है, शिवजयन्ती की सेवाओं के कारण नहीं पहुंचे हैं) उसको भी याद भेजना।

तीनो भाईयों के प्रति:- कारोबार ठीक चल रही है! (अभी तक ठीक चल रहा है, दादी लण्डन में चक्र लगाकर आई है) हिम्मत है ना, संकल्प होता है करना ही है तो हो जाता है। सभी खुश है ना। एक दो में राय करके जो भी करना हो, मीटिंग करके आगे बढ़ते चलो। बाप खुश है।

(नया डायमण्ड लोटस बना है उसका उद्घाटन है) अच्छा है। (बापदादा को निमन्त्रण दिया है) बापदादा तो होके आ गये हैं।

भूपाल भाई से:- सेवा में आगे बढ़ते रहो। (तबियत गड़बड़ रहती है) कोई अच्छे पहचान वाले को दिखाया है! कोई पहचान वाले से परिचय कराके आगे बढ़ो।

(बापदादा ने अपने हस्तों से शिवध्वज फहराया):- आज शिवरात्रि का झण्डा लहरा रहे हैं। सभी शिवरात्रि पर दिल में संकल्प करो कि आगे से आगे बढ़ते हुए विश्व में विजय का झण्डा लहरायेगे। सारे विश्व में जयजयकार हो जाए कि बाबा आ गया, मेरा बाबा आ गया।

“कामकाज करते मेरा बाबा, मीठा बाबा यही दो शब्द सदा याद रहे, यह अलौकिक प्यार का सम्बन्ध ही संगमयुग की सौगात है”

ओम् शान्ति। सभी के चेहरे मुस्कराते हुए, बापदादा से आपस में एक दो को मुस्कराते हुए मिलन मना रहे हैं। आज के चेहरों में हर एक बहुत समय के बाद साकार रूप में आगे पीछे वाले नयन मिलन मना रहे हैं। हर एक का मन यही गीत गा रहा है मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। कितनी आत्मायें बाप और बच्चों का मिलन मनाना देख खुश हो रहे हैं। सबके चेहरों पर मिलन की खुशी का चेहरा दिखाई दे रहा है। चाहे नजदीक हैं, चाहे दूर हैं लेकिन लास्ट वालों में भी मिलन का उमंग उत्साह बापदादा को अपने तरफ आकर्षित कर रहा है। बाप के मुख से वाह मेरे दिल से याद करने वाले बच्चे वाह! बाप के दिल में बच्चे और बच्चों के दिल में बाबा। सभी के मन में मिलन की, खुशी की लहर दिखाई दे रही है। बाप भी दिल से यही गीत गा रहे हैं वाह बच्चे वाह! और बच्चे भी यही गीत गा रहे हैं वाह बाबा वाह! वाह कहने से ही सबके फेस से खुशी की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही है। वैसे तो कितना भी दूर बैठे हो लेकिन सभी के दिल में वाह बाबा वाह और बाप के दिल में वाह बच्चे वाह, शकल में दिल के मिलन की लहर स्पष्ट दिखाई दे रही है। मुख से गीत नहीं गा रहे हैं लेकिन हर एक के दिल का गीत शकल से दिखाई दे रहा है। हर एक का चेहरा हर्षितमुख से कितना मीठा मुस्करा रहे हैं। बाप भी दिल में यही गीत गा रहे हैं वाह बच्चे वाह! हर एक के चेहरे से बाप यही देख रहा है और दिल से कह रहे हैं, जो दिल का आवाज बाप के पास स्पष्ट दिखाई दे रहा है। बाप का यही गीत वाह बच्चे वाह, बच्चे का भी यही गीत वाह बाबा वाह और हर एक की शकल में वाह-वाह के चिन्ह स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। कोई गीत के रूप में कोई दिल के आवाज के रूप में यह नयनों द्वारा अपने दिल का गीत गाते हुए दिखाई दे रहे हैं और बाप भी एक-एक बच्चे के प्रति यही रेसपान्ड दे रहे हैं कि हर एक बच्चा दिलाराम के दिल के सितारे हैं। वाह बच्चे वाह सितारे वाह!

आज सबके सूरत में मूर्त है। बाप भी गीत में दिल में गा रहे हैं वाह हर बच्चा वाह! कितने समय की आश मुखड़ा देखने की आज प्रैक्टिकल में दिखाई दे रहा है। तो बच्चों के दिल में वाह बाबा वाह और बाप के दिल में वाह बच्चे वाह, यह दिल का गीत सभी को अपना भी सुनाई दे रहा है और सर्व का भी सुनाई दे रहा है। बापदादा हर बच्चे का दिल का गीत ऐसे ही स्पष्ट सुन रहे हैं जैसे सामने से हर बच्चा गा रहा है। और बापदादा उसी दिल के गीत को सुनते-सुनते बहुत दुलार ले रहा है। बाप सुनते हुए यही दिल का रेसपान्ड दे रहे हैं वाह हर बच्चा वाह! हर एक के जितने भी बैठे हैं, हर एक के दिल में मेरा बाबा, मेरा... यही आवाज आ रहा है और बाप रेसपान्ड दे रहे हैं हर बच्चे को। चाहे कितने भी दूर हैं, यहाँ तो हैं लेकिन और देशों में भी सभी के मुख से वाह बाबा वाह का गीत बापदादा सुन रहे हैं। हर एक बच्चा वाह बाबा वाह, मेरा बाबा वाह, इसमें ही समाया हुआ है। दिल का गीत है इसलिए आवाज सुनाई नहीं देता है लेकिन बाबा को सभी का आवाज पहुंच रहा है। बापदादा भी रेसपान्ड में कह रहे हैं वाह बच्चे वाह! हर एक के दिल में कौन? सभी क्या कह रहे हैं? मेरा बाबा। यह गीत तो सुना है ना बाप बच्चों का। बाप कहते हैं मेरा बच्चा, बच्चे कहते हैं मेरा बाबा। कितना मीठा आवाज है। बस मेरा जो कह रहे हैं ना, उसकी कमाल है। हर एक की दिल कह रही है मेरा बाबा। बाप की दिल हर एक बच्चे प्रति कह रही है मेरा बच्चा क्योंकि साकार रूप में तो गुप्त दिल की बात है लेकिन हर एक के दिल का आवाज बाप की दिल में स्पष्ट सुनाई देता है। बच्चे कहते हैं मेरा बाबा और बाप कहते हैं मेरा बच्चा। यह बाप और बच्चों का मिलन क्या होता है! यह तो हर एक अनुभवी है। हर एक के मुख से यही शब्द निकलते हैं वाह मेरा बाबा वाह! हर एक को रेसपान्ड भी मिल रहा है वाह बच्चे वाह! लेकिन यह मिलन विचित्र है। सब रेसपान्ड में वाह बाबा वाह कह रहे हैं, लेकिन हर एक अपने-अपने दिल से अपने आवाज में कह रहे हैं और बापदादा इतने सब बच्चों का रेसपान्ड सुन, दिल का प्यार देख कितना हर्षित हो रहे हैं। वह तो अभी इस संगठन में बच्चे जानें बाप का, बाप जाने बच्चों का। दोनों वाह वाह वाह कह रहे हैं और बाप सुन सुनके सभी बच्चों को रेसपान्ड दे रहे हैं, हर घड़ी यही मुख से हर बच्चा गाते रहते वाह बाबा, वाह मेरा बाबा, वाह प्यारा बाबा, वाह दिल में समाने वाला बाबा। आपका प्यार आप जानें और मैं जानूँ। हर एक का चेहरा अगर आप आके देखो तो सबके चेहरे मैजारिटी ऐसे लगते हैं जैसे बहुत समय से प्यार में समाये हुए बच्चे दिल में कह रहे हैं वाह वाह वाह। वाह वाह की धुन हर एक बच्चे के दिल से सुनाई दे रही है। सबके दिल में कौन! क्या कहेंगे? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा। और बाप के दिल में कौन? बस अभी तो मेरे और मीठे दो शब्द याद करना। मीठे बाबा मेरे बाबा। हर एक बच्चे के मन से देखो तो कौन समाया हुआ है दिल में? मेरा बाबा। हर एक के दिल में मेरा बाबा, मेरा बाबा है क्योंकि यह प्यार बाप और बच्चों का अलौकिक प्यार, यह सारे कल्प में इसी जन्म में अनुभव करने वाला है। तो बोलो, हर एक के दिल में कौन? मेरा बाबा। हर एक का चेहरा कितना मुस्करा रहा है। बापदादा तो सामने देख रहे हैं। हर एक बच्चा दिल से मेरा बाबा कहते हुए ऐसे समा जाता है जो बाप और बच्चों के मिलन का चित्र सदा के लिए हर एक के दिल में छप जाता है।

अभी इसमें तो पास हैं कि सबके दिल में बाबा की याद है, कभी भूल भी जाती है कोई हिसाब किताब के कारण लेकिन मैजारिटी थोड़ा भूलती है, मेरा बाबा यह जिगर से इतना पक्का हो गया है जो चलते फिरते सब कहते हैं मेरा बाबा मेरा बाबा यह भूलता नहीं है। और बाप को भी क्या याद रहता है? मेरे बच्चे। रहता है ना। सबके दिल में कौन? पक्का, पक्का? कमाल तो यही है कि यहाँ बच्चों के दिल में बाबा है, वैसे जीवन में साथी याद रहता है लेकिन यहाँ हर एक के दिल से पूछो, दिल में कौन? कहेंगे मेरा बाबा। दिल में कौन? मेरा बाबा। बाबा की बातें ही हर कर्म करते याद रहती हैं। सारा दिन देखो चेक करो काम काज करते भी याद किसकी है? कापी किसको करते हैं? साकार में क्या दिखाई देता है? बाप के दिल में मैं, और मेरे दिल में बाप। ऐसे है ना! हाथ उठाओ। ऐसे है? पक्का है? वैसे कहते काम काज करते भूल जाता है लेकिन यहाँ भूलने का नाम नहीं लेते। और बाप की दिल में कौन? मेरे बच्चे। यह सम्बन्ध संगमयुग की सौगात है। अच्छा।

आज का मिलन तो सबका हुआ। अभी यह मिलन सदा ही याद रहेगा, आत्मा और परमात्मा का मिलन साधारण मिलन नहीं है। किससे भी पूछो आपके दिल में कौन? सब कहते हैं मेरा बाबा। कितना जिगरी प्यार है।

सेवा का टर्न - ईस्टर्न ज़ोन (बंगाल बिहार, उड़ीसा, आसाम, नेपाल और तामिलनाडु के 21 हजार आये हैं) बाप भी यह मिलन भूल नहीं सकता। जब भी बाप को टाइम मिलता है तो क्या दिल में होता है? मेरे बच्चे। लाडले बच्चे और बच्चों को टाइम मिलता तो मेरा बाबा। ऐसे है ना! ऐसे है हाथ उठाओ। भूलने की चीज़ ही नहीं है। कितना भी भूलने की कोशिश करो लेकिन भूलते हुए भूल नहीं सकता। (सभी खड़े हुए) काफी आये हैं। अपने टर्न में सेवा के लिए अच्छे आये हैं। बाप और यज्ञ सेवा से सभी का प्यार है। क्योंकि यह सेवा और मिलन दोनों ही साथ में हो जाता है।

नेपाल से 2500 आये हैं:- बहनें भी हाथ उठाये। अच्छा है बापदादा को भी अगर कोई बच्चा नजदीक से नहीं मिलता तो याद तो आता है ना इसलिए यह मिलन का तरीका बहुत अच्छा है। तो सभी खुश हैं? खुश हैं दो-दो हाथ उठाओ। अगर हैं तो?

तामिलनाडु से 4500 आये हैं:- काफी लोग आये हैं, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा है। रेसपान्ड अच्छा है।

डबल विदेशी 1200 आये हैं:- यह चांस इतने ब्राह्मणों का मिलना यह भी बड़ा भाग्य है। कहाँ-कहाँ से आते हैं और कितने उमंग से आते हैं। बापदादा को एक-एक बच्चे को देख खुशी होती है और एक-एक को सेवा में आने की मुबारक दे रहे हैं। बहुत अच्छा।

बापदादा को सभी बच्चों का टर्न बाई टर्न सेवा में आना बहुत अच्छा लगता है और यज्ञ सेवा हर एक ग्रुप बहुत प्यार से कर रहे हैं, किया है और अभी भी करेंगे। हर एक ग्रुप को बापदादा दिल से रिटर्न दे रहे हैं और सोचा जाए तो यह यज्ञ है किसका? हर एक यज्ञ निवासी का यज्ञ है ना! आप सबका असली घर कहाँ है? यही है ना! कहेंगे कहाँ से आप आये हैं? तो यही कहेंगे ना आबू के हैं। भले कहाँ के भी हो लेकिन वह भी कहाँ है? तो सभी ने सीज़न में अपने-अपने पार्ट में अच्छा सहयोग दिया है, सेवा को पूरा किया है, इसकी बापदादा हर बच्चे को खास मुबारक दे रहे हैं।

दादी जानकी जी से:- यज्ञ में एक एकजैपुल है। बीमार भी है और हाज़िर भी है। अगर दादी क्लास में नहीं आवे तो खाली-खाली लगता है। (गुल्जार दादी, दादी का डाक्टर है, समय पर ठीक कर देती है) किसने भी किया? हिम्मत तो दादी की है ना। अच्छा है। सभी की देखो नज़र है। हमारी दादी, हमारी दादी। जैसे मेरा बाबा है वैसे मेरी दादी है।

मोहिनी बहन:- (हॉस्पिटल की यात्रा करके आई है) अभी तो आ गई। मुबारक है। रोज़ थोड़ा कुछ न कुछ हो जाता है, होते हुए भी समय पर तैयार हो जाए, तो अच्छा है ना! पहुंच तो जाती है। मुबारक हो। मुबारक हो। अच्छा है। हिम्मत है।

न्युयार्क की मोहिनी बहन ने याद भेजी है:- हिम्मत अच्छी रखी है। टाइम लगाया जरूर है लेकिन हिम्मत रख करके अपने को सेफ कर लिया है। (अभी ठीक हो जायेगी) अभी हो जायेगी। बाबा की याद क्या, सभी की याद है।

वृजमोहन भाई, निर्वैर भाई:- अभी तो हॉस्पिटल छोड़ी ना। अभी तो हॉस्पिटल नहीं जायेंगे ना। (4 दिन के लिए जायेंगे) चार दिन के बाद समाप्त। चार दिन के बाद ठीक हो जायेंगे। अच्छा है। अभी सभी ओ.के. हों, वह दिन मनायेंगे। कोई न कोई मतलब कारण से होता है।

वृजमोहन भाई:- यह भी ठीक हो गये हैं। (रमेश भाई से) यह तीनों ही भाई ठीक है ना!

विदाई के समय:- (बापदादा ने माइक लगाने की छुट्टी नहीं दी लेकिन यह महावाक्य उच्चारण किये) जो पुरानी बातें हैं उसको भुला दो, पास्ट इज़ पास्ट। पुरानी बातें सामने आती हैं तो बाबा याद नहीं रहता, अभी एक शिवबाबा को ही याद करो। अभी बहुत पावरफुल योग की जरूरत है, सब तरफ यह बता दो और सब पुरानी बातें मिटाकरके एक बाबा के योग से पावरफुल वातावरण बनाओ और नये सेवा के कुछ प्लैन बनाओ। जब कुछ सेवा का प्रोग्राम बनता है, उसमें अगर अलग-अलग हो जाते हैं तो वह सेवा का प्लैन सफल नहीं होता है, परन्तु संगठन की शक्ति से ही वो सेवा का प्लैन सफल होगा, अभी 10 मिनट अच्छी तरफ से साइलेन्स का अनुभव करो, योग लगाओ। अच्छा।

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा अव्यक्त स्थिति में रह अव्यक्त मिलन का अनुभव करने वाले, साकार सो अव्यक्त पालना के अनुभवी सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें एवं सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - ड्रामा की बनी बनाई नूध प्रमाण बापदादा का रथ दादी गुल्जार जी का स्वास्थ्य वार्षिक मीटिंग के समय ठीक नहीं था इसलिए मुम्बई में इलाज़ के लिए दादी जी गई थी। कुछ समय हॉस्पिटल में रहने के बाद अभी दादी जी पारला सेवाकेन्द्र पर स्वास्थ्य लाभ ले रही हैं। शरीर थोड़ा कमजोर होने कारण साकार रूप में दादी जी मधुबन नहीं पहुंच सकी, यह बापदादा की इस सीजन का लास्ट टर्न था, इसलिए शान्तिवन में 25 हजार भाई बहिनें बापदादा से मिलन के लिए पहुंचे हुए हैं। महाराष्ट्र आंध्र प्रदेश की सेवाओं का टर्न है। अतः अव्यक्त मिलन के अनुभवों के लिए 9 तारीख को रात 11 बजे से 5 बजे तक सभी ने अखण्ड योग भट्टी की। फिर सवेरे से ही सभी विशेष अन्तर्मुखी बन अव्यक्त वतन की सैर करते दोपहर 2 बजे से ही डायमण्ड हाल में पहुंच गये।

6.00 से 8.00 बजे तक पावरफुल योग तपस्या के बीच पहले अव्यक्त मिलन की श्रेष्ठ विधि पर सूर्य भाई ने क्लास कराया। 6.30 बजे से 7.30 बजे तक सभी ने वीडियो द्वारा अव्यक्त मिलन, शक्तिशाली दृष्टि एवं वरदानों की दिव्य अनुभूति की। फिर दादी जानकी जी, दादी रतनमोहिनी जी तथा मुख्य बड़े भाई, बड़ी बहिनें स्टेज पर पधारे, पहले बापदादा को भोग लगाया गया। फिर गुल्जार दादी जी ने बापदादा को पारला में भोग स्वीकार कराया, अव्यक्त बापदादा दादी जी के तन में पधारे और मधुर महावाक्य उच्चारण किये तथा निर्वैर भाई से भी मिलन मनाया। वह महावाक्य आपके पास भेज रहे हैं, साथ में 10 तारीख सवेरे की मुरली आपके पास नहीं भेजी गई थी इसलिए यह अव्यक्त मुरली जो बापदादा के अवतरण के समय वीडियो द्वारा सबको दिखाई और सुनाई गई। वह भेज रहे हैं, सबको रिफ्रेश करना जी।

अव्यक्त बापदादा की पधरामणी तथा मधुर महावाक्य

अपने स्व स्वरूप में, भविष्य स्वरूप में और संगम का महान स्वरूप तीनों रूपों को जानते हो? और सदा तीनों ही स्वरूप एक सेकण्ड में सामने आ जाते हैं? इस समय बापदादा बच्चों की वर्तमान ब्राह्मण स्वरूप की महिमा देख रहे हैं। हर एक की महिमा बहुत महान है क्योंकि सारे कल्प में सबसे भाग्यवान स्वरूप इस समय यह संगमयुग के समय का है और संगमयुग के भाग्य को हर एक अनुभव कर रहे हैं। वाह संगमयुग का वरदानी समय वाह! ठीक है। बापदादा तो देख रहे हैं, हर एक बच्चा भी अपने भविष्य स्वरूप को जानकर हर्षित हो रहे हैं। अच्छा है।

दादी जानकी जी ने गुल्जार दादी को और पारला निवासियों को बहुत-बहुत यादप्यार और बधाई दी।

ड्रामा में जो हुआ सो अच्छा। सभी खुशी से बाबा से मिले। कुछ मिस नहीं किया ना! क्योंकि बाबा और हम बच्चे सभी साथ-साथ बैठे हैं। सभी ने बाबा से दृष्टि लिया। दादी हमेशा मुझे अपने साथ सभा में ले आती थी, आज मिस कर रही थी। आज दादी पारला में है, हम सबको बापदादा से मिलाया, सब बहुत-बहुत खुश हो गये। ड्रामा की ऐसी नॉलेज है, जो शान्त बना देती है। अभी सभी खुश हुए ना! सभी को बाबा की भासना आ गई। भासना और भावना, हमारे को जो भासना चाहिए बाबा के मिलन की, वह मिलन की भासना मिस नहीं हुई। बाबा के हम बच्चे हैं, बाबा ने आप हम सबको कहाँ बिठाया है। बाबा ने सूक्ष्म में हम सबको कितनी सकाश दी है,

बाबा की सकाश हम सबको मिल रही है। बाबा का हमारे लिए कितना प्यार है।

पारला में निर्वैर भाई ने बापदादा को गुलदस्ता दिया:- (बापदादा ने निर्वैर भाई के मस्तक पर हाथ रखा) बापदादा ने बहुत स्नेह से सभी को फल दिखाते हुए कहा कि सभी महसूस करो कि यह फल हमारे मुख में आ रहा है। बापदादा को एक-एक बच्चा प्यारा है। ऐसे नहीं पहले नम्बर में बहिन हैं, या भाई हैं, सभी हैं। जिसकी दिल बाबा के साथ है उसके दिल में बाबा है, बाबा के दिल में वह है।

निर्वैर भाई ने सभी को याद देते हुए कहा कि आज बापदादा का विशेष मिलन दिवस है और हम सभी देश विदेश के भाई बहिनें खास सम्मुख आये हुए हैं। बापदादा हम सबकी दिल पूरी करते हैं और हम सबसे मिलने के लिए सम्मुख पहुंचे हैं। आप सबको इसकी बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो। बापदादा के आने से हर एक ब्राह्मण बच्चे का निश्चय और परिपक्व होता है। बापदादा हमेशा संगमयुग पर अपने रथ द्वारा हमारे साथ होंगे। हम ज्ञान रत्नों से और धारणाओं से अपनी झोली भरते, विश्व महाराजा महारानी का भविष्य ताज पहनेंगे और बापदादा खुद हम सबको यह ताज पहनायेंगे।।

योगिनी बहन:- ड्रामानुसार हमें बहुत खुशी है कि हम पारला में बैठे हुए फील कर रहे हैं कि हम डायमण्ड हाल में ही बैठे हैं। हमारे साथ देश विदेश के सभी पधारे हुए भाई बहिनें, टीचर्स बहिनें हैं। आज बापदादा ने सबको बहुत प्यार भरी दृष्टि देकर वरदानों से सबकी झोली भर दी है।

हमारी नीलू बहन भी बापदादा के रथ की बहुत प्यार से सेवा कर रही हैं और हमारे निर्वैर भाई भी हमारे साथ हैं, हमें बहुत खुशी है, निर्वैर भाई भी ठीक होते जा रहे हैं।

“सन्तुष्टता की शक्ति चेहरे और चलन में धारण कर ब्रह्मा बाप समान बनी, सदा खुश रही और खुशी बांटी”

आज चाहे सम्मुख चाहे दूर के सन्तुष्टमणि बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा अपने सन्तुष्टता की शक्ति से चमकते हुए मुस्कराते मिलन मना रहे हैं। यह सन्तुष्टता की शक्ति सबसे महान है इसलिए इसमें सर्व प्राप्तियां हैं। सन्तुष्टता की शक्ति धारण करने वाली सन्तुष्टमणियां स्वयं को भी प्रिय, बाप को भी प्रिय, परिवार को भी प्रिय हैं क्योंकि सन्तुष्टता जहाँ है वहाँ सर्वशक्तियां सन्तुष्टता में समाई हुई हैं। सन्तुष्टता की शक्ति का वायुमण्डल चारों ओर फैलता है। सन्तुष्टमणि वाली आत्मायें कभी भी माया से हार नहीं खा सकती, माया हार खाती है। सन्तुष्टमणि आत्मायें सर्व की दिल को अपना बना सकती हैं। सन्तुष्टमणि आत्मा चाहे माया, चाहे प्रकृति के भिन्न-भिन्न हलचल को ऐसे अनुभव करती जैसे एक कार्टून को देख रहे हैं। ऐसे हर एक बच्चा अपने को सन्तुष्टता की शक्ति में सम्पन्न समझते हो? अपने से पूछो कि मैं सन्तुष्टमणि हूँ? कई बच्चे कहते हैं कभी-कभी रहते हैं, सदा नहीं लेकिन बापदादा को कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता है। बापदादा सदा हर एक बच्चे को यादप्यार देते हैं, खुशी देते हैं। तो बापदादा को यह कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता, सदा खुशनुमा। तो बापदादा यही चाहते हैं कि इस कभी-कभी शब्द को क्या परिवर्तन कर सकते हो! कभी-कभी शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में ही नहीं है, सदा। तो सभी बच्चे जो बाप के प्यारे, माया के प्रभाव से न्यारे बने हैं, क्या वह आज इस कभी-कभी शब्द को समाप्त कर सकते हैं? कर सकते हैं? क्योंकि बापदादा बहुत समय से कह रहे हैं कोई भी हलचल अचानक आनी है। उसकी तैयारी के लिए, अगर अभी भी कभी-कभी के संस्कार होंगे तो क्या सदाकाल के राज्यभाग्य के अधिकारी बन सकेंगे? ब्रह्मा बाप से सबका दिल का प्यार है। ब्रह्मा बाबा से वायदा है कि साथ हैं, साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे। यह वायदा पक्का है ना! कांध हिलाओ। पक्का है? कितना पक्का! ब्रह्मा बाप ने कभी-कभी शब्द बोला! आप सबको भी सदा अमृतवेले यादप्यार दिया और सदा बाप के साथ मिलकर ज्ञान की बातें, स्नेह की बातें, उमंग-उल्हास की बातें सुनाई। अगर सभी से हाथ उठवायें कि बापदादा से प्यार है तो सभी दो दो हाथ उठावेंगे। है ना! पक्का? जब प्यार है तो प्यार वाले के एक-एक शब्द से भी प्यार होता है। ब्रह्मा बाप ने कभी शिव पिता से यह नहीं कहा कि कभी-कभी होता है। सदा फॉलो फादर किया और साथ में आपको भी कराया क्योंकि ब्रह्मा बाप का बच्चों से जिगरी प्यार है इसीलिए आपका नाम भी क्या है? ब्रह्माकुमारी, शिवकुमारी नाम नहीं है। तो ब्रह्मा बाप से प्यार अर्थात् ब्रह्मा बाप का कहना और ब्रह्माकुमार कुमारी का मानना। प्यार अर्थात् न्योछावर। तो किस पर न्योछावर होंगे? उनकी आज्ञा पर। जो बोला वह किया क्योंकि ब्रह्मा बाप के साथ शिव बाप है। अकेला नहीं। बापदादा, बापदादा कहते हो ना!

तो आज बापदादा कभी-कभी शब्द को हर बच्चे के मुख से समाप्त करने चाहते हैं। तो आप सभी बच्चे बाप के साथी हो। प्यार है ना! प्यार में तो अपने आपको न्योछावर भी कर देते हैं, यह तो सिर्फ शब्द को न्योछावर करना है क्योंकि बापदादा हर बच्चे को माला का विजयी रत्न बनाने चाहते हैं।

तो आज बापदादा विशेष सन्तुष्टता की शक्ति हर एक बच्चे में ब्रह्मा बाप समान देखने चाहते हैं। इस एक सन्तुष्टता की शक्ति में सब शक्तियां आ जायेंगी। तो आज बापदादा का विशेष वरदान है सन्तुष्टता के शक्ति भव! कुछ भी हो अपनी सन्तुष्टता को कभी नहीं छोड़ना। कई बच्चे कहते हैं, रूहरिहान करते हैं ना! तो कहते हैं सन्तुष्ट बनना सहज है, लेकिन सन्तुष्ट बनाना बहुत मुश्किल है। कोई कुछ भी करता है और आप समझते हो कि यह ठीक नहीं है फिर भी दिल में क्यों रखते हो? यह ऐसा करता, यह ऐसा करता, इसका स्वभाव ऐसा है, इसका ऐसा है...। दिल में नहीं रखो क्योंकि आपने दिल में बाप को बिठाया है। बिठाया है ना? कांध हिलाओ। बिठाया है पक्का? कि निकालते भी हो बिठाते भी हो? अगर बिठाया है तो क्या दिल में बाप के साथ बात भी रखेंगे? तो दिल में नहीं रखो।

बापदादा ने पहले भी यह युक्ति सुनाई है कि सदा ऐसी आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखकर

अपनी शुभ कामना को कार्य में लगाओ और वैसे भी देखो आप समझते हो यह अच्छा नहीं करती, तो खराब चीज़ है। तो अगर कोई आपको खराब चीज़ देवे तो आप लेंगे? तो जब खराब समझते हो तो बुद्धि में रखना, दिल में रखना तो खराब चीज़ लिया क्यों? ऐसे अपनी दिल में सदा बाप को रखते हुए बाप समान बन जायेंगे। यह तो वायदा है ना, बाप समान बनना है ना! बनना है पक्का? कि पता नहीं बनेंगे या नहीं बनेंगे? यह तो नहीं सोचते? प्यार माना फॉलो फादर। तो बापदादा अभी एक-एक बच्चे को शुभ कामना, शुभ भावना सम्पन्न आत्मा देखने चाहते हैं।

तो आज बापदादा क्या चाहता है? ब्रह्मा बाप समान बनो। फॉलो फादर क्योंकि समय की हालतें तो हलचल में आ भी रही हैं और आनी भी हैं इसलिए बापदादा हर बच्चे को यही शिक्षा देने चाहते हैं कि सदा खुश रहो और खुशी बांटो। जितनी खुशी बांटेंगे उतनी खुशी बढ़ेगी। आपको खुशनुमा देख दूसरे भी 5 मिनट के लिए तो खुश होवे। दुःखी आत्मायें अगर आपको देख करके 5 मिनट भी खुश हो जाएं तो उन्हीं के लिए तो बहुत दिलपसन्द बात है। तो आज बापदादा हर एक बच्चे को विशेष सन्तुष्टता की शक्ति चलन और चेहरे से धारण कर और अन्य को भी कराने का विशेष ध्यान खिचवा रहे हैं। अच्छा।

आज जो सभी पहली बार आये हैं वह उठो। देखो, आपको दिखाई दे रहा है। आधा क्लास पहले बारी के हैं। हाथ उठाओ। देखो, सभी के हाथ देखो। आपके नये-नये भाई बहिन कितने आपके साथी बने हैं। मुबारक हो, बहुत-बहुत मुबारक हो। अभी जैसे यहाँ तक पहुंचे हो ना! बापदादा से मिलने तक पहुंचे हो, आगे क्या करना है? फॉलो ब्रह्मा बाप। बापदादा को भी आप बच्चों को देख करके खुशी होती वाह! बच्चा आ गया! सारे परिवार को भी खुशी होती है हमारे भाई बहन आ गये, आ गये, आ गये। अभी फॉलो ब्रह्मा बाप। अच्छा।

सेवा का टर्न महाराष्ट्र, आन्ध्र और मुम्बई का है:- अच्छा। इस ज़ोन की भी संख्या बहुत है। नाम है महाराष्ट्र। तो महा होंगे ना! तो जैसे नाम है वैसे ही संख्या भी महान है। तो बापदादा देख करके खुश है। बाकी बापदादा की एक आशा और भी ज़ोन वालों के प्रति रह गई है। वह कौन सी है? हर सेन्टर यह खुशखबरी लिखे कि हमारा सेन्टर निर्विघ्न है, मिलनसार है। सब बाबा के बच्चे एक्क्यूरेट।

आपकी तपस्या कम नहीं है। चाहे टीचर है, चाहे स्टूडेंट हैं, दुनिया के हिसाब से हर एक महान आत्मायें हैं। अभी-अभी देखना आपको यह निर्विघ्न का थोड़ा सा करो तो सभी आपको जैसे आपके जड़ चित्र में शुभ भावना से देखते हैं, ऐसे आपको चैतन्य रूप में देवियों के रूप में, देवताओं के रूप में देखेंगे। बाकी सेवा सभी ने अच्छी की है। उसकी बापदादा मुबारक दे रहे हैं।

डबल विदेशी भाई बहिन:- डबल विदेशी, डबल से डबल होते जाते हैं। बापदादा ने देखा कि स्व के ऊपर, स्वमान के ऊपर और अपने वृत्ति के ऊपर अटेंशन अच्छा दे भी रहे हैं और दिला भी रहे हैं। यज्ञ स्नेही का, यज्ञ सहयोगी का पार्ट भी अच्छा बजा रहे हैं इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को अनेक बार की मुबारक दे रहे हैं। डबल विदेशी मधुबन का श्रृंगार हैं और बाप का विश्व कल्याणी नाम विदेश ने सिद्ध किया है इसलिए सभी तीव्र पुरुषार्थी बनके रहना। पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी क्योंकि अभी समय है, सभी के लिए तीव्र पुरुषार्थी बनने का। पुरुषार्थ का समय अभी गया, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। तो कभी भी साधारण पुरुषार्थी नहीं बनना। सदा चेक करना, तीव्रता है? साधारण तो नहीं हो गया! वैसे अभी समय भी सूचना दे रहा है - तीव्र पुरुषार्थी बनने का। तो बापदादा खुश है, परिवार भी खुश है और सबको मुबारक दे रहे हैं। खुशी है बाप को। कितने देशों से देखो इकट्ठे हुए हैं। अच्छा।

चारों ओर के दूर बैठे दिल में समाने वाले बच्चों को बापदादा भी देख रहे हैं। सभी के प्यार की खुशबू मधुबन में पहुंच रही है। तो सभी को अभी तीव्रगति से चलना है, तीव्र पुरुषार्थ करना है, तीव्रता दुनिया के लोगों में सुख की लानी है। दुःखी को सुखी करना है। यह सुखी करने का सन्देश दे करके सभी को सुखी बनाना है, इस सेवा में तीव्रता है भी और लानी भी है। अच्छा। सबको दिल का बहुत-बहुत यादप्यार स्वीकार हो। अच्छा। ओम् शान्ति।

“जो बच्चे याद में रहते हैं वह बापदादा के दिल में सदा समाये हुए हैं, सबके दिल में अब यही खुशी है कि हमारा सतयुगी राज्य आया कि आया, सभी ऐसा युग लाने में बिजी हैं”

सभी स्नेही बच्चों की यादप्यार बापदादा तक पहुंच रही है। हर एक की दिल यही बोल रही है मेरा बाबा और बापदादा क्या बोल रहे हैं? मेरे बच्चे। यह मुलाकात बड़ी सुन्दर है। हॉल को देख करके, हॉल में बच्चों के श्रृंगार को देख करके बापदादा को खुशी हो रही है और यही दिल में आ रहा है वाह बच्चे वाह! हर एक की शकल में मिलन के खुशी की लहर दिखाई दे रही है। यह मिलन कितना वैल्युबुल है। हर एक के दिल में और बापदादा के दिल में भी यही आ रहा है वाह मेरे बच्चे वाह! और बच्चों की दिल में क्या आ रहा है? वाह बाबा वाह! यह मिलन भी कितना प्यारा है। हर एक के दिल में यही शब्द समाये हुए हैं मेरा बाबा। और बाप के दिल में क्या है? मेरे बच्चे। एक एक बच्चा चाहे दूर बैठा है, चाहे नजदीक बैठा है, लेकिन कहाँ बैठा है? इस सीट पर बैठे हैं? कहाँ सीट मिली है! बापदादा के दिल में हर बच्चा समाया हुआ है। दो आवाज आ रहे हैं। एक तो वाह बाबा वाह! दूसरा फिर बाप का आवाज है वाह मीठे बच्चे वाह! हर एक ने दिल में समाने के बाद सम्मुख नयनों द्वारा देख क्या क्या गीत गा रहे हैं! सबके दिल से एक ही शब्द निकल रहा है मेरे बाबा और बाबा के मुख से क्या निकलता है! मेरे बच्चे। यह बाप और बच्चों का मिलन कितना वन्दरफुल है। बाप भी कितना हर्षित हो रहा है। यह भी कुछ नहीं है, नहीं तो घरों में भी जहाँ भी हैं वहाँ स्थूल में भी इस हॉल में हैं, यह बाप और बच्चों का मिलन कितना न्यारा और प्यारा है। मैजारिटी बच्चे बाप के दिल में समाये हुए हैं। बाप भी एक-एक बच्चे को देख चाहे लास्ट में बैठा है लेकिन बाप के दिल में समाया हुआ है। बाप भी बच्चों को इस आंखों से देख कितने खुश हो रहे हैं वाह बच्चे वाह! एक-एक बच्चा बाप के नयनों का नूर है इसलिए आप सब एक दो में टाइल देते हैं नयनों के नूर। भले कहाँ भी रहो लेकिन याद करने वाले बच्चों के नयनों में बाप समाया हुआ है। और बाप के दिल में सभी बच्चे समाये हुए हैं, जो याद में हैं वह समाया हुआ है। अपने को देखते हो ना बाप के दिल में समाये हुए। यह दृश्य भी इस संगमयुग का विचित्र दृश्य है, जो अभी बापदादा देख रहे हैं। भले कुर्सी पर हॉल में बैठे हो लेकिन बापदादा क्या अनुभव कर रहे हैं? सभी दिल में समाये हुए दिल के दीपक हैं। और बापदादा भी हर दीपक को देख कितने खुश हैं! वाह बच्चे वाह! बाप भी बच्चों के सिवाए रह नहीं सकता और बच्चे भी बाप से सम्मुख मिलकर बहुत-बहुत अनुभव करते हैं। अभी भी अनुभव कर रहे हैं। सबके दिल में कौन! क्या कहेंगे सभी! मेरा बाबा। और बाप के दिल में कौन! मेरे बच्चे। यह बाप और बच्चों का दिल का मिलन इस संगम पर ही प्राप्त होता है। तो सबके दिल में कौन! मेरा बाबा। बाप के दिल में कौन! मीठे बच्चे। हर एक अनुभव अपने यथा शक्ति कर रहे हैं। दोनों की तरफ से दिल में कौन! मेरा बाबा, बाप के दिल में कौन! मेरे बच्चे। यह वन्दरफुल मिलन आप बच्चे ही कर सकते हैं। मेरा बाबा और बाप के दिल में कौन! मेरे बच्चे, यह मिलन इस संगमयुग पर ही होता है। देखो कहाँ कहाँ से आ गये। हर एक की दिल क्या कह रही है! मेरा बाबा। और बाप की दिल क्या कह रही है! मेरे बच्चे, सिकीलधे बच्चे। अभी हर एक बच्चे को जैसे आपकी दिल में बाबा समाया हुआ है ऐसे सभी के दिल में बाप आ जाए, यह पुरुषार्थ बच्चे भी कर रहे हैं और बाप बच्चों के पुरुषार्थ को देख करके खुश होते रहते हैं क्योंकि जहाँ बाप है वहाँ और कोई बात आ नहीं सकती। बाप की दिल में बच्चे, बच्चों की दिल में बाप। ऐसे अनुभव है ना! बापदादा भी हर बच्चे को देख कितना खुश होता है। दिल से क्या निकलता! वाह बच्चे वाह! अभी सबके दिल में कौन! मेरा बाबा। और बाप के दिल में कौन? वाह बच्चे वाह! सारे हॉल का दृश्य देख देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं।

(बाबा आपसे मिलन मनाने के लिए 20 हजार भाई बहिनें आये हैं, डबल विदेशी 60 देशों से 700 आये हैं, सेवा के टर्न में - राजस्थान वाले 4000 आये हैं, पंजाब वाले 10 हजार आये हैं।) अभी सतयुग को लाने का आधार आप बच्चों का है। हर एक बच्चा इसी सेवा में लगा हुआ है। बापदादा को खुशी है कि सभी ऐसा युग लाने में बिजी हैं। बापदादा भी हर बच्चे के अन्दर का उमंग-उत्साह देख खुश हो रहे हैं। अन्दर ही अन्दर कितना पुरुषार्थ कर रहे हैं वह युग लाने का। बापदादा बच्चों का पुरुषार्थ भी चेक करता है। मैजारिटी इस धुन में लगे हुए हैं हमारा युग जल्दी से जल्दी आ जाये। आ रहा है, आप सबके पुरुषार्थ को बापदादा देख खुश है, लेकिन सदा नहीं है। थोड़ा सा सदा का हो जाए तो इस आंखों से देखेंगे। आपके लिए ही तो यह युग है। आप ही युग बदलने का पुरुषार्थ कर रहे हैं और सफलता भी है। सबके दिल में यही उमंग है हमारा युग आया कि आया। वह अपना युग है, अपना युग ला रहे हैं। और होना ही है, यह भी गैरन्टी है। बापदादा भी होवनहार बच्चों को देख खुश होते हैं। क्या गीत गाते! वाह बच्चे वाह! हर एक की सूरत में अपना भविष्य स्पष्ट है, साथ और समय भी है, अब हम अपने वतन में चलेंगे। सबके दिल में अपना वतन आ रहा है ना!

बस सामने खड़ा है। हमारा युग आ रहा है। खुशी हो रही है ना!

डबल विदेशी भाई बहिनें:- यह भी अच्छा है जो सभी को चांस मिल जाता है मिलने का। तो स्पेशल एक-एक ज़ोन को अलग अलग टर्न मिला हुआ है और बापदादा भी बच्चों को देख करके खुश होते हैं वाह मेरे बच्चे वाह! विदेश वालों को भी यह अपना देश प्यारा लगता है। जब आते हैं यहाँ तो उन्हीं के अनुभव बताते हैं कि अपने असली स्थान पर आते कितने खुश होते हैं और बाप भी ऐसे बच्चों को देख खुश होते हैं। सभी खुश तो है ही और अभी खुश नहीं होंगे तो कब खुश होंगे, यही समय है बाप और बच्चों के मिलन का, पहचान से। बच्चे भी खुश हो रहे हैं और बाप भी खुश हो रहे हैं वाह! सारी स्मृति आ रही है ना। सारे चक्र की स्मृति आ रही है। अभी तो बाकी थोड़ा समय है, जिसको अपना युग कहते हैं, अभी दूसरे के युग में अपना मिलन मना रहे हैं। लेकिन पक्का याद है कि हमारा युग आया कि आया। जब मधुबन में आते हो, खुश तो अभी रहते ही हो लेकिन मधुबन में आते हो तो खास खुशी होती है कि यहाँ ही हमको राज्य करने आना है। अभी तपस्या कर रहे हैं और यहाँ ही राज्य करने आना है। यह भासना आती है ना! कि हमारे लिए राज्य का स्थान भी है, सेवा का स्थान भी है। खुशी है ना। अपना राज्य स्थान देखकर खुशी हो रही है ना। हमारा यहाँ ही राज्य था और अब तो आया कि आया। ऐसा सहज योग, राजयोग सारे कल्प में नहीं होता। आप ही निमित्त हो और अपना अधिकार फिर से अनुभव कर रहे हो।

देखो यह समय कितना वैल्युबुल है, जो पहचान रहे हैं कि हमको राज्य भाग्य मिल रहा है। हम हैं क्या और क्या बनने वाले हैं! नशा है, खुशी है, हम ही थे और हम ही हो रहे हैं। खुशी है! है खुशी तो हाथ उठाओ। हाँ देखो कितनी खुशी है क्योंकि हमारा युग आने वाला है। देखो, यहाँ सब मातायें दिखाई देती हैं। मातायें खुश कितनी हो रही हैं, वाह हमारा युग आ गया, हमारा युग आ गया। अकेली आप भी नहीं होंगी, युगल होंगे। राज्य करेंगे ना! तो राज्य अकेला थोड़ेही करेंगे। राज्य में तो दोनों ही होंगे ना। तो खुशी होती है हमारा राज्य आ गया। बाप आया ही है राज्य देने के लिए। और सबको कितनी खुशी है! अब अपना राज्य होगा। हमारा राज्य। नशा कितना है! और राज्य की खुशी कितनी है! हमारा राज्य आया कि आया। कितनी खुशी है! बताओ। कैसे बतायेंगे। ताली बजाओ। तालियों का आवाज देखो क्या है! वाह! और सबकी शकलें देखो, इतनी मुस्करा रही हैं, हमारा राज्य आ गया। खुशी है ना सभी को! तभी तो तालियां बजाईं। अभी तो दुःखी होना या रोना उसकी जरूरत ही नहीं है, खुशी के दिन आ गये, हमारा राज्य आ गया, हमारा राज्य... नशा कितना है! दूसरे के राज्य में बहुत टाइम रहे अभी हमारा राज्य, खुशी है ना! भाईयों को खुशी है! बहनों को है? देखो, चारों ओर खुशी देख करके कितना अच्छा लग रहा है। कोई के दिल में दुःख की लहर नहीं, खुश और बापदादा भी आप सभी को इस खुशी की बहुत-बहुत-बहुत बधाई दे रहे हैं।

दादी जानकी जी बापदादा से गले मिली:- सभी सोच रहे हैं हम भी मिलें। लेकिन बाबा के हृदय में सब समाये हुए हो। एक एक एक बाबा के दिल में समाया हुआ है।

मोहिनी बहन:- सब ठीक है ना! (आपके वरदानों से ठीक है) वरदान तो है ही। बापदादा क्या कर रहा है! वरदानों से ही चला रहा है क्योंकि यहाँ रह नहीं सकता इसलिए वरदानों से चला रहा है। सभी खुश है ना। बहुत खुश। सभी खुश है। चेहरा दिखाई दे रहा है। सभी के चेहरे दिखाई दे रहे हैं कि सेवा में मजे में हैं। थोड़ा समय सेवा के लिए मिला है, ज्यादा समय नहीं है।

(तीनों भाईयों ने बापदादा को गुलदस्ता दिया) तीनों ही खड़े हो। अच्छा चल रहा है ना! (सभी की तबियतें नीचे ऊपर हैं) वह भी खुशी में ठीक हो जायेगी। फिर भी देखो वायुमण्डल का फर्क तो होता है ना। वहाँ और यहाँ रहने में तबियत में फर्क तो पड़ता है। सभी की तबियत ठीक है। कोई भी ऐसा बीमार नहीं है, सभी ठीक हैं, कोई बीमार नहीं हैं। खुश हैं तो बीमार नहीं। सब खुश है ना! हाथ उठाओ। यह खुशी ही खुराक है। और खुराक मिले या नहीं मिले। यह खुशी की खुराक अच्छी है। (अभी दादी जानकी कहती हैं मैं बीमार हूँ) दादी जानकी भी बीमार नहीं है। यह तो इनका थोड़ा हिसाब-किताब रहा हुआ है, वह जल्दी चुकतू हो रहा है। अच्छा सम्भाल भी रही है और तबियत भी अच्छी है। बस खुश रहना, यह है दवाई। यह दवाई बीमारी को आने नहीं देगी। आयु के हिसाब से, बीमारी के हिसाब से सभी सोचते हैं लेकिन यह बेफिक्र है। (दादी जानकी जी के 100 वर्ष के सेवाओं की किताब विदेशी भाई बहिनों ने बनाई है, जिसका बापदादा ने विमोचन किया) आप सबके भी तो 100 साल मैजारिटी के हो गये होंगे! (किताब देखकर) बहुत अच्छा है।

(ओमप्रकाश भाई इन्दौर, मोहिनी बहन अमेरिका और कमलेश बहन कटक तीनों बीमार हैं, आपको बहुत याद दी है) जो भी बीमार है उन सभी को लेकिन उसके साथ आप सभी को बहुत बहुत यादप्यार है और सदा याद रहेगी। सभी के दिल में बाबा बाबा है, और बाबा के दिल में कौन! बच्चे।

“प्रभु प्यारों का संगठन संगम के इस महान समय में ही होता है, हर बच्चे के दिल में बाबा और बाबा के दिल में सिकीलधे बच्चे हैं”

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि हर एक बच्चा बाप को देख हर्षित हो मिलन मना रहा है। यह बाप और बच्चों का रूहानी मिलन कितना प्यारा है। यह मिलन अमर बनाने वाला मिलन है। हर एक बच्चा अमर भव के वरदानी है। कुछ भी हो लेकिन बच्चे बाप से मिलन मनाने में सदा बिजी हैं। सबके मुख से क्या निकल रहा है? वाह बाबा वाह! और बाप के मुख से यही बोल निकल रहे हैं - वाह मेरे सिकीलधे बच्चे वाह! वाह! सबके मुख से वाह-वाह का गीत सुनाई दे रहा है। सबके चेहरे वाह-वाह के गीत गा रहे हैं। बापदादा भी रेसपान्ड दे रहे हैं वाह बच्चे वाह! सबके दिल का आवाज चाहे दूर हैं, चाहे नजदीक हैं लेकिन सबके दिल का आवाज रेसपान्ड कर रहा है, बाप कहते वाह बच्चे वाह और बच्चे कहते वाह बाबा वाह। यह वाह वाह का गीत गूँज रहा है। सबके फेस से आटोमेटिक वाह वाह निकल रहा है। आज की मुबारक सबके मुख से सुनाई दे रही है। सभी एक ही खुशी का गीत गा रहे हैं वाह बाबा वाह! बाप के मुख से गीत है वाह सिकीलधे एक-एक बच्चा वाह! तो इस समय सारी सभा के दिल का आवाज वाह बाबा वाह! बाप का आवाज वाह बच्चे वाह! सब वाह वाह हैं। भले पुरुषार्थी हैं, नम्बरवार भी हैं लेकिन हर एक के मन का आवाज एक ही है वाह वाह! सोच क्या रहे हैं! वाह वाह कर रहे हैं। आप सबके दिल का आवाज वाह वाह का है ना! बाबा कहते वाह सिकीलधे बच्चे वाह और बच्चे कहते वाह बाबा वाह! तो सब कौन बैठे हैं? कहाँ से भी आये हैं लेकिन यह संगठन किन्हीं का है? चाहे नम्बरवार भी हैं लेकिन बाप के बच्चे हैं इसलिए जैसे बाप वाह वाह है, हर एक की दिल में क्या बज रहा है? वाह बाबा वाह। बाप की दिल में क्या गीत बज रहा है? वाह बच्चे वाह! भले नम्बरवार हैं लेकिन हर एक के जीवन का लक्ष्य क्या है? विश्व में अगर वाह वाह का संगठन देखना हो तो कहाँ देखने में आयेगा?

आज भी अभी बापदादा वाह वाह का संगठन देख रहा है। चाहे नम्बरवार तो हैं लेकिन हैं वाह वाह! सब प्रभु प्यारे हैं। तो यह संगठन प्रभु प्यारों का है। हर एक चाहे नम्बरवार हो लेकिन मूल आधार सबका एक है। सबके दिल से मुख से क्या निकलता है? वाह बाबा वाह! और बाप के मुख से क्या निकलता है? वाह सिकीलधे बच्चे वाह! तो हर एक अपने को चाहे बैठने में आगे पीछे हो लेकिन हर एक बाप के सिकीलधे हैं। बाप भी हर एक बच्चे को उसी रूप में देख रहे हैं। हर एक के दिल में कौन? तो क्या कहेंगे? वाह वाह बाबा! और बाप की दिल में कौन? हर बच्चा है। नम्बर है लेकिन सिकीलधे सब हैं।

आज का यह संगठन क्या कहेंगे? हर एक बाप का सिकीलधा है। ऐसे अनुभव करते हो ना! सबके सूरत से ऐसा अनुभव हो रहा है कि सबके दिल में एक बाप है। और बाप भी हर बच्चे को देख देख मुस्करा रहा है वाह बच्चा वाह! यह मिलन इस समय का मिलन कितना महान है! सारे कल्प के अन्दर अगर महान समय है तो अब है इसीलिए गायन है संगमयुग महान युग है। बापदादा इसी महानता से बच्चों से मिल रहे हैं। बच्चे कहते हैं बाप महान है, बाप क्या कहते हैं? चाहे कैसा भी बच्चा है लेकिन बाप का अति प्यारा है। भले नम्बरवार है लेकिन बाप को हर बच्चा प्यारा है। बाप का प्यार हर बच्चे को अनुभव में है। प्यार से क्या कहते? मेरा बाबा। और बाप क्या कहते? एक एक को, मेरा बच्चा। एक दो से प्यारे हैं।

आज का दिन मिलन का दिन है। कितने भी बच्चे हैं, कहाँ भी है, कैसा भी है लेकिन बाप का प्यारा है। ऐसे है? हर एक बाप का प्यारा है। हाथ उठाओ। देखो, सभी के हाथ यहाँ आके देखो। दादी यहाँ से देखो सबका कितना प्यार है। सबके प्यार का हाथ उठ रहा है। यहाँ से भी देख रहे हैं। यहाँ बैठे भी देख सकते हैं। जहाँ भी देखो कौन बैठे हैं? हाँ देखो आके कितना मजा आता है। बाप के प्यारे, लाडले बैठे हैं और कितने साधारण बैठे हैं। सभी बाप के प्यारे हैं ना! हाथ उठाओ। यह सीन आके देखो, सब कैसे मुस्कराते हैं। सबके दिल का हाल शकल से दिखाई दे रहा है। सबके दिल में

कौन? क्या कहेंगे? मेरा बाबा। और बाप क्या कहते हैं? मेरा बच्चा। सभी बाप के प्यारे लाडले हैं ना। हैं? हाथ उठाओ। देखो, बाप देख रहे हैं, आपको देखने में नहीं आता लेकिन बाप कहते हैं एक बारी आके सभा को देखो, कितने प्यारे हैं। कितने लाडले हैं। देखा है? आओ (बापदादा दादी जानकी को बुला रहे हैं) आ सकती हैं। हाँ खड़े होकर देखो। (वन्दरफुल बाबा वाह बाबा वाह, बाबा बहुत अच्छी सभा है) हर एक बच्चा लाडला है।

सेवा का टर्न इन्दौर का है, 7 हजार आये हैं, उसमें होस्टल की 150 कुमारियां हैं:- सब सेवा के लिए एवररेडी हैं। बाप ने देखा हर एक ज़ोन समय पर अपना पार्ट अच्छा बजा रहे हैं और आप सब भी हर ज़ोन के सेवा से सन्तुष्ट हैं ना! सन्तुष्ट है? हाथ उठाओ।

500 डबल विदेशी 55 देशों से आये हैं:- डबल विदेशी ज्यादा आये हैं। डबल विदेशी सभी हाथ उठाओ। देश के भी अच्छे निमित्त बने हुए हैं। डबल विदेशी, वैसे भी विदेशी पुरुषार्थ करने में अच्छे हैं। पुरुषार्थ में आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे नहीं कि इन्डिया वाले नहीं। हर एक बच्चा चाहे इन्डियन हैं, चाहे विदेशी है लेकिन हर बच्चा अच्छे पुरुषार्थ में लगे हुए हैं। हर एक के मन में यही है कि नम्बर आगे से आगे लेना ही है। बापदादा भी बच्चों का पुरुषार्थ देख खुश है कि बाप से, दादा से सभी का चाहे विदेशी चाहे देशी, हर एक का बापदादा से दिल का प्यार अच्छा है और बापदादा का प्यार भी देश विदेश एक-एक बच्चे से दिल का प्यार है। चाहे नम्बर कैसा भी हो लेकिन बाप का प्यार लास्ट बच्चे से भी ज्यादा है क्योंकि हर एक याद में बैठते हैं तो किसकी याद में बैठते हैं? बाप की याद में बैठते हैं। जो बच्चे एक ही बाप की याद में रहते हैं तो बाप भी चाहे देशी चाहे विदेशी सबका प्यारा है। बाप के दिल में कौन? हर एक बच्चा दिल का दुलारा है।

बाप का सभी बच्चों के लिए, चाहे देशी विदेशी हर बच्चे के लिए दिल में प्यार है। बाप ने देखा है कि हर बच्चे का भी बाप से प्यार है तभी चल रहे हैं। अगर बाप से कनेक्शन नहीं हो तो शक्ति कहाँ से लेंगे। बाप से ही तो शक्ति लेके चल रहे हैं। बच्चों का प्यार बाप से अच्छा है। और बाप का प्यार हर बच्चे से है। कहाँ भी है चाहे देश, चाहे विदेश लेकिन हर बच्चा बाप का प्यारा है। चाहे कोई भी हो, बाप का प्यार चला रहा है। बाप को याद ही नहीं करेंगे तो शक्ति कहाँ से मिलेगी। हर एक का सम्बन्ध बाप से है। कोई कहे हमारा बाप से प्यार नहीं है, वह हाथ उठाओ। जो अपने आपको समझते हैं कि हम अपने पुरुषार्थ से चल रहे हैं। पुरुषार्थ कितना भी करें, कोई समझते हैं कि हम अपने पुरुषार्थ से चल रहे हैं, तो वह हाथ उठाओ। (कोई नहीं)

मोहिनी बहन:- सदा बाबा साथ है। हर बच्चे के साथ है। सदा बाप साथ है, ऐसे अनुभव होता है? बाप हर एक बच्चे के सदा साथ है, बाप एक होते भी सबसे निभा सकता है। अभी आप देखो जितने भी बैठे हो, तो किसका साथ है? बाप का ना! तो बाप के साथी हैं, एक-एक के साथ बाप है और साथ रहेंगे। बाप हर एक के साथ है ना।

मोहिनी बहन, न्युयार्क:- जो पार्ट बजा रहे हैं, अच्छा है। (बाबा यहाँ तक ले आये इसलिए आपको बहुत-बहुत थैंक्स) कहाँ भी हो, हर बच्चे का यादप्यार बाप को पहुंचता रहता है। कोई भी दूर नहीं है, दिल में है। सबसे नजदीक हो। (दूरी नहीं लगती है) दूर है भी नहीं।

सभी बाप के दिल में समाये हुए हैं। सभी दिल में हैं ना? दिलवर कौन? बापदादा ही तो दिलवर है। बच्चों का दिल भी बाप के साथ है ही। बिना बाप के साथ के कोई है ही नहीं। साथ हैं, साथ रहेंगे। सभी सदा साथ के अनुभव में रहते हैं ना! हाथ उठाओ।

(रमेश भाई ने पूना के जगदम्बा भवन का नक्शा बापदादा को दिखाया) जितना भी बढ़ाने चाहो उतना बढ़ा सकते हो, चाहे जगदम्बा, चाहे कोई कार्य के निमित्त कोई बच्चा भी है, तो भी हर एक बढ़ सकता है और बढ़ रहा है। बापदादा को खुशी है कि हर एक बच्चा आगे बढ़ रहा है। जितनी भी ताकत है उतना अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। हर एक बच्चे में उमंग उत्साह अच्छा है। बापदादा खुश है कि हर एक बच्चा सदा अपने पुरुषार्थ में लगा हुआ है और लगा रहेगा।

सभी अच्छे पुरुषार्थ में आगे बढ़ रहे हैं, यह देख बापदादा खुश है। कुछ भी हो लेकिन अपना पुरुषार्थ अपने साथ है और सारा परिवार भी साथ है, अकेले नहीं हो। साथी हैं और साथ रहेंगे। हर एक के दिल में एक ही बाप याद है।

(वृजमोहन भाई ने दिल्ली - इन्डिया गेट का प्रोग्राम सुनाया, 8 नवम्बर को वहाँ बड़ा प्रोग्राम रखा है, वहाँ दोनों दादियां आ रही हैं उसमें विशेष हम क्या करें?) विशेष यही है कि बाप को प्रत्यक्ष करना है। बाप को प्रत्यक्ष करना अर्थात् सब कुछ करते सब सम्बन्ध एक बाप से रखना है। तो बाप से सम्बन्ध रखने का आधार बहुत अच्छा है। खास संगठित प्रोग्राम रखना है। कोई भी नहीं समझे कि यह दिल्ली का प्रोग्राम है। सबका बाप है, सबका प्रोग्राम है। भले कोई नजदीक है, कोई दूर है लेकिन है सभी का। यही उमंग उत्साह है और इसी को ही बढ़ाना है। कहाँ भी प्रोग्राम है लेकिन हमारा है। एक ही परिवार है। एक ही सबका बाप है। एक हैं, चाहे अनेक दिखाई देते हैं लेकिन सभी एक हैं। यही विशेषता यहाँ की है, टुकड़ा टुकड़ा नहीं है।

(डा. बनारसी भाई ने मेडिकल विंग सेवाओं का बुक दिखाया) अच्छा है, सभी बनाते हैं और बाप खुश होते हैं। बस सब मिल करके चल रहे हैं और चलते रहेंगे।

भूपाल भाई ने उदयपुर के मकान के बारे में पूछा:- जो भी कार्य चलता है ना उसमें सभी का साथ है। एक का नहीं, ब्रह्माकुमारियों का है, कुमार उसमें आ गये। (उदयपुर में सबका आना जाना होता है) आना-जाना तो रहेगा ही, परिवार है ना।

ओमप्रकाश भाई, इन्दौर:- तबियत ठीक है। (पहली बार बीमार हुआ हूँ) सबकी मदद से बाप के साथ से आगे बढ़ते चलो। ठीक चल रहे हैं, आगे बढ़ते रहेंगे। तबियत थोड़ी है ढीली लेकिन ठीक हो जायेगी। अच्छा है। सम्भाल से चलते रहो।

कमलेश बहन, कटक:- ठीक है। अच्छा है। (आपकी ब्लैसिंग से ठीक है) ब्लैसिंग तो सदा है ही।

जो भी तबियत में थोड़ा बहुत होता है, तो समय कलियुग का है, इसमें यह सब तो आता ही है लेकिन सब कुछ होते हुए बाप की याद में सूली से कांटा बनाना है। आवे कितना भी सूली के रूप में लेकिन बाप की याद से कांटा बन जाये। अच्छा।

“सदा फखुर में रह बेफिक्र बादशाह बनो, तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सम्पन्न और समान बन साथ चलने की तैयारी करो”

आज बापदादा बेफिक्र बादशाहों की सभा देख रहे हैं। यह सभा इस समय ही लगती है क्योंकि सभी बच्चों ने अपने फिकर बाप को देकर बाप से फखुर ले लिया है। यह सभा अभी ही लगती है। आप भी हर एक सवेरे से उठते कर्म करते भी बेफिक्र और बादशाह बन चलते हो ना! यह बेफिक्र का जीवन कितना प्यारा लगता है। बेफिक्र की निशानी क्या दिखाई देती है? हर एक के मस्तक में लाइट, आत्मा चमकती हुई दिखाई देती है। यह बेफिक्र जीवन कैसे बनी? बाप ने सभी बच्चों के जीवन से फिकर लेकर फखुर दे दिया है। जिनके जीवन में फखुर नहीं फिकर है उनके मस्तक में लाइट नहीं चमकती है। उनके मस्तक में बोझ की रेखायें देखने में आती हैं। तो बताओ आपको क्या पसन्द है? लाइट या बोझ? अगर कोई बोझ भी आता है तो बोझ अर्थात् फिकर बाप को देकर फखुर ले सकते हैं। आप सबको बेफिक्र लाइफ पसन्द है ना! देखने वाले भी बेफिक्र लाइफ पसन्द करते हैं।

तो बापदादा आज चारों ओर के बच्चों के चाहे सम्मुख हैं, चाहे जहाँ भी बैठे हैं, बच्चों के मस्तक बीच चमकती हुई लाइट ही देख रहे हैं। तो सदा बेफिक्र रहते हैं या कभी कोई फिक्र भी आता है? है कोई फिकर? जब बाप ने प्रकृतिजीत, विकारों जीत बना दिया तो फिकर कैसे आ सकता है? तो हाथ उठाओ बेफिकर बने हो? बने हो सदा? सदा बने हो या कभी-कभी? कभी-कभी वाले भी हैं? हाथ तो नहीं उठाते, बापदादा भी नहीं देखने चाहते हैं। बापदादा हर बच्चे को बेफिक्र बादशाह देखने चाहते हैं। अगर कभी-कभी वाले भी हैं तो बहुत सहज विधि है जो भी थोड़ा बहुत फिकर आता है तो मेरे को तेरे में बदल लो। यह हृद के मेरेपन को, मेरे को तेरे में बदलने की बहुत सहज विधि है। आप तो कहते ही हो मेरा बाबा, तो अब मेरा क्या रहा? हृद का मेरा तो समाप्त हुआ ना! मेरा बाबा हो गया। सभी दिल से कहते हो ना मेरा बाबा! प्यारा बाबा! मीठा बाबा! तो मेरे में तेरे को समाना मुश्किल है क्या? फर्क क्या है? ते और मैं, इतना छोटा सा फर्क है। संकल्प कर लिया सब तेरा और मेरा क्या रहा? मेरा बाबा।

तो बापदादा ने देखा मैजारिटी बच्चों ने हृद के मेरे को तेरा बनाया है इसलिए क्या बन गये? बेफिक्र बादशाह। तो आज बापदादा बच्चों को बेफिक्र बादशाह स्वरूप में देख रहे हैं। देखो, भक्ति मार्ग में भी आपके चित्र बनाते हैं तो डबल ताज दिखाते हैं। एक तो लाइट का ताज है ही क्योंकि बेफिक्र आत्मा की निशानी है मस्तक में लाइट चमकती है और दूसरा ताज विकारों पर विजयी बने हो इसलिए ताज दिखाया है इसलिए यह अटेन्शन रखो कि जब बापदादा ने फिकर लेकर फखुर दे दिया तो क्या बन गये? बेफिक्र बादशाह। बादशाह बने हैं तो तख्त भी चाहिए ना! तो बापदादा ने तीन तख्त के मालिक बनाया है। जानते हो तीन तख्त कौन से हैं? एक तख्त भ्रुकुटी का, यह तो सबको है ही। दूसरा तख्त है बापदादा का दिलतख्त और तीसरा है विश्व का तख्त, राज्य का तख्त। तो आप सबको यह तीन तख्त प्राप्त हैं ना! सबसे श्रेष्ठ है बापदादा का दिलतख्त। तो चेक करो तख्त पर रहते हो? क्योंकि बापदादा के दिलतख्त पर कौन बैठता है? जिसने सदा स्वयं भी बापदादा को अपने दिलतख्त में बिठाया है, जो सदा श्रेष्ठ स्थिति में मास्टर सर्वशक्तिवान है। तो चेक करो कि सदा तख्तनशीन हैं? या कभी मिट्टी में भी आ जाते हैं। यह देहभान मिट्टी है। बहुत समय मिट्टी में रहे हैं तो कभी-कभी मिट्टी में तो नहीं चले जाते?

तो बापदादा सभी बच्चों को समय का ईशारा दे रहे हैं। अचानक का पाठ पक्का करा रहे हैं, इसके लिए इस संगम के समय का बहुत-बहुत महत्व रखना है क्योंकि इस एक जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध बनानी है इसलिए बापदादा ने इशारा दिया था तो संगम के समय में दो बातों का हर समय अटेन्शन देना है। वह दो बातें तो याद होंगी - समय और संकल्प। बापदादा को सभी ने व्यर्थ संकल्प, संकल्प द्वारा देने की हिम्मत रखी थी। तो चेक करो हिम्मत सदा कायम है? क्योंकि हिम्मते बच्चे एक बार तो बाप हजार बार मददगार है। तो अभी क्या समझते हो? व्यर्थ संकल्प का जो

हिम्मत रख बाप के आगे संकल्प किया वह कायम है? क्योंकि इस व्यर्थ संकल्पों में समय बहुत जाता है और आपका इस समय के प्रमाण कार्य है विश्व की आत्माओं को सन्देश देने का। तो व्यर्थ संकल्प को समाप्त करना है तब दुःखी, अशान्त आत्माओं को सुख शान्ति का अनुभव करा सकेंगे। बापदादा को दुःखी बच्चों को देख तरस पड़ता है। आपको भी अपने भाई-बहिनों को देख तरस तो पड़ता है ना! अच्छा।

15-12-11

सेवा का टर्न इन्दौर: और कनार्टक ज़ोन का है -- मुबारक हो। यह भी चांस अच्छा लगता है ना! सेवा का भण्डार सहज मिल जाता है। दोनों ज़ोन उमंग-उत्साह से पुरुषार्थ में भी बढ़ रहे हैं और आगे भी हर एक अपने पुरुषार्थ को तीव्र कर आगे बढ़ते रहेंगे। बापदादा खुश होते हैं, यह चांस भी एक तो सेवा का फल भी मिलता है और बल भी मिलता है। सबकी नज़र कहाँ जाती है? अभी किस ज़ोन का टर्न है, वह नज़र जाती है और सेवा, मधुबन की सेवा अर्थात् सेवा का फल और बल मिलना। तो बहुत अच्छा किया। निर्विघ्न सेवा की, सबको सन्तुष्टता का फल खिलाया। बापदादा को खुशी होती है क्योंकि विशेष चांस मिलता है ना और बच्चे मधुबन में पहुंचते हैं, मधुबन में आना, इतने बड़े परिवार से मिलना और इतने बड़े परिवार की सेवा के निमित्त बनना, यह भी बहुत बड़ा भाग्य बन जाता है। तो निर्विघ्न सन्तुष्टता का फल खाया इसलिए बापदादा विशेष दोनों ज़ोन को मुबारक दे रहे हैं। अच्छा है, हर एक के ऊपर बाप की भी नज़र जाती और परिवार की भी नज़र जाती। प्रत्यक्ष आत्माओं को खुशी भी मिलती, खुश करते भी और मिलती भी खुशी, दोनों ही है। तो मुबारक हो दोनों को।

चाहे दूर हैं, चाहे नजदीक हैं लेकिन बापदादा के दिल में समाने वाले हैं क्योंकि हर बच्चे का प्रॉमिस है कि हमारे दिल में बाप है और हम हर एक बाप के दिल में हैं इसलिए बाप का टाइटल दिलाराम है। अच्छा, कनार्टक वाले तो बहुत आये हैं और सेवा का पार्ट भी अच्छा बजाया है।

15-12-11

डबल विदेशी भाई बहिनों से:- डबल विदेशी भी बापदादा ने देखा सेवा में भारत की आत्माओं से कम नहीं हैं। बापदादा खुश होते हैं कि हर एक अपने-अपने स्थान में सेवा की वृद्धि भी कर रहे हैं और स्वयं को भी अच्छे उमंग उत्साह में चला रहे हैं। डबल विदेशियों का यह संस्कार है कि जो करेंगे वह उमंग उत्साह से करके पूरा करेंगे और पुरुषार्थ के तरफ भी अटेन्शन है। तो सभी हाथ उठाओ कि सभी तीव्र पुरुषार्थी हैं? तीव्र पुरुषार्थी हैं? अच्छा। सबके तरफ से भी बहुत-बहुत मुबारक है, क्यों? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् बापदादा की आशाओं को पूर्ण प्रैक्टिकल करने वाले। तो बापदादा तीव्र पुरुषार्थ की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

“ड्रामा में संगम का यह मिलन बहुत-बहुत अमूल्य और न्यारा प्यारा है, यह भी अचानक की लाटरी है जो भाग्यवान बच्चों को ही मिलती है”

आज सभी दिल के दुलारे हर एक बच्चा अपने दिल के दुलारे बाप से मिलन मना रहे हैं। बापदादा भी चारों ओर के एक-एक बच्चे को देख खुश हो रहे हैं वाह मेरे नयनों में समाया हुआ हर एक बच्चा है क्योंकि हर एक में कोई न कोई विशेषता है जिस विशेषता से बच्चे और बाप का मिलन हो रहा है। कहाँ से भी आये हो लेकिन है सभी बाप के लाडले। हर एक बड़े प्यार से वाह बाबा वाह! कहकर मिलन मना रहे हैं। हर एक बच्चा चाहे आगे बैठे हैं चाहे पीछे। पीछे वाले खास हाथ उठाओ। कितना हर एक के चेहरे पर बाप और बच्चे के मिलन की खुशी नज़र आ रही है। हर एक की दिल से यही बोल निकल रहे हैं वाह बाबा वाह! आपने यह मिलन का जो साकार में सम्मुख सामने मिलन का मौका दिया, हर एक बच्चा सम्मुख मिलन का गोल्डन चांस ले रहा है। बाप भी बच्चों से मिलन का मौका देख कितना हर्षित हो रहा है। इतनी बड़ी सभा देख बाप भी बार-बार कहते वाह बच्चे वाह! यह मिलन कितना महान है। कहाँ कहाँ से बच्चे मिलन मनाने पहुंच गये हैं। यह बाप और बच्चों का मिलन कितना प्यारा और न्यारा है। हर एक के नयनों में बाप और बच्चे के मिलन का आनंद उनके नयनों में समाया हुआ है। यह सारी सभा का एक-एक बच्चा गीत गा रहे हैं वाह बाबा वाह! और बाप भी गीत यही गा रहे हैं वाह मेरे बच्चे वाह! ड्रामा में यह बाप और बच्चों का मिलन कितना प्यारा है। हर एक बच्चे के दिल से यही गीत सुनाई दे रहे हैं वाह बाबा, वाह आपका दुलार, वाह आपके नयनों का मिलन! यह मिलन सदा दिल में छप गया है। जब चाहे तब इस सीन को इमर्ज करें तो कितने सुख की फीलिंग आती है। दिल से गीत निकलता है वाह बाबा आपकी रूहानी नज़र, एक-एक बच्चा देखकर कितना हर्षित हो रहा है। ऐसा मिलन सामने से बाप वाह बच्चे वाह कहके मिलन मना रहे हैं। हर एक के नयन इस मिलन में इतने खुश हैं जो हर एक समझता है कि यह साकार दुनिया में साकार रूप में बाप और बच्चों का मिलन वन्दरफुल है। हर एक की दिल कह रही है वाह बाबा वाह! हमने तो सोचा नहीं कि ऐसे बाबा का मिलन हो सकता है, यह मिलन तो बहुत-बहुत-बहुत प्यारा है। यह मिलन तो स्वप्न में भी न था कि ऐसे मिलन हो सकता है। लेकिन यह बाप और बच्चों का मिलन, बच्चे बाप को देखकर प्रसन्न हो गये, वाह बाबा वाह! और बाप भी एक-एक बच्चे को देख कितना खुश हो रहा है, वाह! वाह! वाह! की धुन चल रही है। हर एक के खुशी की लहर, उनकी शकल पर चमक रही है। सबके मुख से यही आवाज निकल रहा है वाह बाबा वाह! आज तो आपने मिलन का स्वरूप अनुभव करा दिया। हर एक की दिल से सारे हाल में एक ही आवाज आ रहा है वाह मीठा बाबा वाह! ऐसा मिलन देख सभी इस मिलन के नशे में मगन आत्मायें नज़र आ रही हैं। सबसे एक ही आवाज है वाह बाबा वाह! हर एक का दिल यही बोल रहा है, सारी सभा के दिल का गीत बड़ा मधुर चल रहा है। यह गीत कितना प्यारा है। साकार रूप में यह मिलन बहुत अमूल्य है। ड्रामा में यह मिलन संगमयुग का बहुत प्यारा और न्यारा है। हर एक के दिल में मेरा बाबा, मेरा बाबा, मेरा बाबा यही है। यहाँ सामने अगर आके देखो तो सबके मस्तक चमक रहे हैं। लाइट पड़ रही है क्योंकि बाप और बच्चे का मिलन साकार में इतना समीप यह देख करके सब अपने को अति भाग्यवान अनुभव कर रहे हैं। बच्चे बाप के साथ होते भी अपने साथियों से मिलने का चांस देख इसमें ऐसे लगे हुए हैं जैसे कोई अचानक लाटरी मिल जाए। यह मिलन एकजैम्पुल है संगमयुग में बाप और बच्चों के मिलन का और वह भी साकार रूप में मिलन, यह तो किसके स्वप्न में भी नहीं था लेकिन अब सबकी दिल में यह मिलन सदा के लिए समाया हुआ है। हर एक के दिल में क्या है! यह मिलन डायरेक्ट बाप और बच्चे का मिलन यह सोचो कितना महान है। सब इसी दिन का इन्तजार करते थे। ऐसे साकार रूप में मिलन यह बड़ा अमूल्य मिलन है। तो ऐसे मिलन मनाओ जो बाद में इस मिलन का स्वरूप समाया हुआ दिल में वह बार बार दिखाई दे, अनुभव हो कि अभी

भी मिलन मना रहे हैं। बाप और बच्चों का मिलन कितना प्यारा है और कितनी खुशी होती है। बाबा मेरा मेरे से मिल गया।

तो आज सभी के मन में बाप और बच्चे का अव्यक्ति मिलन क्या होता है, वह अनुभव सभी बच्चों को बापदादा करा रहे हैं। सभी ने किया, यह मिलन। साधारण बात नहीं है। यह मिलन के भाग्य को लेना, यह हर एक को मिलता है। लेकिन मिले हुए भाग्य को अनुभव में लाना, यह अनुभव भले इतने सारे हैं लेकिन रीयल में अनुभव करना, यह भाग्य की बात है। तो आज बापदादा ऐसे बच्चों का भाग्य देख रहे हैं कि कैसे दिल से मिलन मना रहे हैं, याद करते थे गीत गाके लेकिन अभी गीत क्या मिलन मना रहे हैं। यह भी हर एक का भाग्य है, जो यह भाग्य साकार में यहाँ प्राप्त होने का भाग्य है। ऐसा भाग्य भाग्यशाली ही प्राप्त करता है।

तो बापदादा आज का मिलन देख बहुत खुश है कि बच्चे साकार में मिलन मनाने का अनुभव कर रहे हैं। हर एक के मन में कौन समाया हुआ है? बाबा। मेरा बाबा, प्यारा बाबा। बाप के दिल में तो सारे रात दिन बच्चे ही बच्चे हैं क्योंकि हर एक के दिल में अभी याद ही बाबा है। मिलन भी बाबा का है। तो देखो बाप ने देखा कितना बाप भोला भण्डारी है, याद किया और प्राप्ति हुई। ऐसे है! जो समझते हैं बाप से मिलन हो रहा है, वह हाथ उठाओ। बाप तो बच्चों का चेहरा देख खुश हो रहे हैं तो कितना समय अलग रहे! और अब मिलन हुआ तो कितना मिलन में लगन में मगन हैं। बापदादा भी बच्चों के मिलन में बहुत खुश है। बिछुड़ा हुआ कोई भी मिले तो कितना होता है तो यह भी अलग रहे बहुकाल परन्तु अभी यह मिलन भी हो गया। हो गया ना! हाथ उठाओ। वाह! यह सीन बाबा को बहुत अच्छी लगती है। पीछे वाला भी हाथ उठा रहा है। हर एक के मन की मौज शकल से दिखाई दे रही है।

सेवा का टर्न दिल्ली और आगरा का है:- (14 हजार दिल्ली और आगरा के आये हैं, टोटल सभा 24 हजार भाई बहिनों की है) अच्छा है देख लिया। इसमें भी मातायें ज्यादा है। बाप की यह शक्ति सेना कितनी पावरफुल है, यह देख रहे हैं। पाण्डव भी कम नहीं हैं लेकिन पाण्डव सभी को उमंग-उत्साह में बढ़ाने वाले हैं। माताओं के अगर पति नहीं आते तो मातायें बिचारी रह जाती हैं। कोई-कोई तो कितना भी बंधन है लेकिन वह तरीके ऐसे निकालती हैं जो बापदादा भी उनके तरीके देख खुश होते हैं। बापदादा भी जब सुनते हैं ना यह इतनी बांधेली आई कैसे! तो जब कहानियां सुनते हैं तो कहते हैं वाह मातायें वाह! इन्वेन्शन ऐसी निकालती हैं जो और किसकी बुद्धि में आ ही नहीं सकती है इसलिए संगम पर मातायें और इतनी बहादुर निकलें, कोई डर नहीं क्या होगा... मार भी मिलेगी लेकिन बाबा मिला सब कुछ मिला। अच्छा है, देखो, कितना अन्दाज माताओं का है। सभा में देखो ना तो पौना क्लास माताओं का है। वह बहुत प्यासी रही और प्यासी को अगर पानी मिल जाए तो उसके लिए क्या होता है? अमृत। तो बापदादा बच्चों को देख खुश होते हैं, कई ऐसे मेल भी हैं जिनकी कहानी ऐसी ही है, क्योंकि उन्हीं को यह पता नहीं है ना कि यह क्या चीज़ है! तो बापदादा ऐसे बच्चों को देख करके बहुत खुश होते हैं कि वाह मेरे बहादुर बच्चे वाह!

डबल विदेशी 50 देशों से 500 आये हैं:- अच्छा है, सभी ने हिम्मत रखी है। और हिम्मत की मदद बापदादा देता है। जो डबल विदेशी इस ग्रुप में आये हैं, वह खड़े रहें। अच्छा है। खुश कितने हैं। खड़े हैं, थके हुए भी हैं लेकिन खुश हैं। अच्छा।

सभी को यादप्यार तो मिलेगा लेकिन विदेशियों को खास आज यादप्यार दे रहे हैं। वैसे तो जो भी इन्डिया के भी आये हैं उन्हीं के भी बंधन ऐसे ऐसे हैं जो फारेन वालों के नहीं हैं। लेकिन बाबा सिर्फ उन्हीं की जो चतुराई है, कैसे बंधन को तोड़ा, कैसे फायदा उठाया, यह कहानियां देखकर बाबा भी इन्ज्वाय करता है। तो सभी खुश। सभी दो दो हाथ उठाओ। देखो, दादी (दादी जानकी को) कितना अच्छा लगता है। यहाँ स्टेज से तो और ही अच्छा लगता है। तो सभी ज्ञान के नाते से खुश हैं, प्रेम के नाते से नहीं, ज्ञान के नाते से सभी खुश हैं। अच्छा।

दादी जानकी जी बापदादा से मिल रही हैं:- भाग्य में भी इतनी आयु वाली होते भी जवान है। (दादी जी की आयु 100 साल की हो गई) (दादी ने कहा शरीर बिचारा है लेकिन शक्ति बाबा की है, बाबा चला रहा है, अब बाबा को प्रैक्टिकल सबूत देना है, आया यह भी खुशी की बात है) बाबा समझता है ना! बाबा आपसे करा रहा है। कैसी भी अवस्था हो, लेकिन आप निमित्त हो ना। (परसों हंसा लण्डन लेकर जा रही है)

मोहिनी बहन से:- सदा खुश रहती है ना। यह खुशी इसकी सेवा कर रही है, कितना भी हो लेकिन शक्ल पर हो नहीं लगता। खुशी में चलाती रहती है। सभी चलाते हैं, सभी की आयु आजकल कितनी है। (मोहिनी का 75 वां जन्म दिन है) सब जो भी बहनें हैं, वैसे तो भाई भी हैं लेकिन अभी बहनों की बात चल रही थी। तो जो भी बहनें हैं, भाई गुप्त हैं। सेवा के कारण बहनों का नाम हो जाता है, बाकी भाई तो हैं ही, बिना भाईयों के भी काम नहीं चलता। देखो, भाई भी कम नहीं हैं, बहनें भी कम नहीं है। ब्राह्मण परिवार की जो भी मातायें और भाई हैं, सब बड़े काम के हैं।

(मोहिनी बहन को बापदादा ने जन्म दिन की गिफ्ट दी) ठीक है ना। अपने को चला रही है।

त्रिमूर्ति भाई:- भाई भी आये हैं वाह! वैसे अच्छी-अच्छी मातायें भी अच्छा काम करने वाली हैं। बाहर का काम नहीं लेकिन ब्राह्मणों की सेवा में मातायें अच्छा काम करती हैं। (इन्डिया गेट और लाल किले के प्रोग्राम का एलबम बापदादा को दिखाया)

(नये वर्ष 2016 के आगमन की खुशी में मोमबत्तियां जलाई गईं, केक काटा गया, बापदादा ने सबको नये वर्ष की बधाई दी)

दादी जानकी जी ने कहा कि मैं कोई भी प्रकार का संकल्प नहीं चलाती हूँ। बाबा चला रहा है। वन्डर है शरीर कैसा भी है परन्तु कदम-कदम पर दिल से निकलता है मेरा बाबा। जैसे आज शक्ति आई, बाबा ने दी, मुरली सुनाने की। आज बाबा आया खुशी है। बाबा की कमाल है जो यहाँ इतना समय बैठी। मैंने अन्दर से सोचा कल सुबह को भी मुरली सुनायेंगी। तो यह बाबा की हर कदम पर मदद है। यह (हंसा) निमित्त है मेरे को ट्रेवलिंग कराने की। बाबा आया तो कितनी खुशी हुई। अभी तो नये साल में सब निमित्त बने हुए बाबा के बच्चे हर एक अपने-अपने कार्य को अच्छे से अच्छा करेंगे ही।

(बाबा छुट्टी है जाने की) छुट्टी है। अभी पूछके बना दिया है, टिकेट आ गई है। जब भी जरूरत हो जा सकती हो। अभी यही हेड है ना, अभी तो यही फैसला करेगी कि क्या करना है!

नये वर्ष के आगमन पर सबको मुबारक:- बाबा की आज्ञा अनुसार जा रहे हैं आगे, आगे जाते रहेंगे। विजय तो निश्चित है ही। विजय दाता हमारे साथ है तो विजय कहाँ जायेगी।

सभी को बाबा की याद तो कदम कदम पर है ही और हमारे दिल में अभी निमित्त कौन बाबा ने दिया है! वह भी सबको पता है। बाबा जिसको निमित्त बनाता है, सभी उनके साथी हैं, तो कदम-कदम पर सभी साथ निभायेंगे। आज से नया साल शुरू हो रहा है। नया साल शुरू हुआ है तो उसमें नवीनता का संकल्प जरूर आता है। यह वर्ष जो शुरू हो रहा है उसमें कुछ नवीनता करनी चाहिए, जिसको जो भी संकल्प हो, कोई के नये विचार हो, कुछ नया होना चाहिए तो लिखकर भेज दो। कहने की जरूरत नहीं है। बाकी कोई नवीनता का विचार है तो वह लिखकर भेज दो तो टाइम बच जायेगा। आपका भी संकल्प काम में आ जाये तो अच्छा है इसलिए आप शार्ट में अपना संकल्प लिखके भेज देना। अच्छा। सबको नये वर्ष की बधाई।